ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः
राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

मई 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

श्री नरेश कौशिक जी विधायक, हल्का, बहादुरगढ़ का बड़ा सहयोग

माननीय श्री नरेश कौशिक जी एम.एल.ए., बहादुरगढ़ ने आत्मशुद्धि आश्रम के लिए 2,50,000 रूपये (ढाई लाख रूपे) की राशि भेंट की। आत्मशुद्धि परिवार की तरफ से विधायक जी का धन्यवाद किया। स्वामी धर्ममुनि जी ने विधायक जी को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर उनके साथ उनके सहयोगी श्री राजपाल शर्मा जी, यशपाल गांधी जी, डॉ. सुरेन्द्र भारद्वाज जी, श्री अरविन्द तथा श्री महेश कुमार जी उपस्थित रहे।

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य बने डॉ. सूरजमल दहिया

आदर्श व्यक्तित्व के धनी डॉ. सूरजमल दहिया

डॉ. सूरजमल दहिया

डॉ. सूरजमल दहिया का जन्म चौ. लच्छीराम जी गांव किडोली, पहलादपुर जिला सोनीपत के घर 20 मई, 1939 को माता श्रीमती धनकोर की कोख से हुआ। आपके ताऊ प्रसिद्ध आर्यसमाजी डॉ. चन्द्रभान जी जो जिला बोर्ड के सदस्य और वैदिक भक्ति साधना आश्रम आर्य नगर के भूमि दानदाता थे। इनके आदर्शों का डॉ. सूरजमल के व्यक्तित्व व कृतृत्व पर विशेष प्रभाव रहा। डॉ. सूरजमल ने पशु चिकत्सक के रूप में दिल्ली सरकार में 38 वर्षो की सेवा उपरान्त निर्देशक के उच्च पद से सेवानिवृत हुये। 2 वर्ष तक आप दिल्ली सरकार में पशु पालन विभाग में निदेशक सलाहकार के रूप में रहे। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती इन्द्रा देवी भी आर्य विचारधारा वाली महिला है और आत्मशुद्धि पथ पत्रिका की आजीवन सदस्या हैं। अच्छा संस्कारित परिवार है। तीनों बेटे और एक बेटी भारत सरकार में कर्नल, केन्द्र सरकार में निर्देशक व तीसरा बेटा डॉ. अनिल युनिवर्सिटी में प्रो. हैं। बेटी डॉ. सुनीता राजस्थान के प्रतिष्ठित कुन्ड परिवार में ब्याही हुई है। आत्मशुद्धि परिवार ऐसे आर्य परिवार की सुख-समृद्धि की मंगल कामना करता है।

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें !! ओ३म् !! आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ चलें

आगामी निःशुल्क सरल आध्यात्मिक शिविर

सोमवार 25 जून से रविवार 1 जूलाई, 2018 तक

प्रिय बन्धुओं! मास मई में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जून अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-A0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे।

– व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

पं.ज्येष्ठ-द्वि.ज्येष्ठ सम्वत् 2075 मई 2018

सृष्टि सं. 1972949119 दयानन्दाब्द 194

वर्ष-17) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-05

(वर्ष 48 अंक 05)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी'

मो. 9416054195, 9728236507

❖

सह सम्पादक:

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

❖

परामर्श दाता: गजानन्द आर्य

❖

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री

(08053403508)

❖

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

❖

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
आजीवन	: 1500 रुपये (15 वर्ष के लिए)
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रुपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर आजीवन : 350 डालर .

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल, : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
समाचार	4
आसन, प्राणायाम, व्यायाम-प्रशिक्षण एवं चरित्र-निर्माण...	5
वर्णश्रम-मर्यादा की प्रकाशित उषा	6
परमात्मा की प्राप्ति सात्विक भोजन से	7
आत्मा अविनाशी तथा इसका शरीर नाशवान है	9
सफलता का मार्ग	11
शाश्वत सत्य/बड़ा अगर बनना है	12
महारानी द्रौपदी	13
सरस्वती वन्दना/शैतान ना होता	14
छल-कपट से बचें	16
प्रत्येक गृहस्थ के लिए अनिवार्य	18
नीम एक स्वास्थवर्द्धक औषधि है	22
आपकी सेहत का जाम है बादाम	23
बच्चों को संस्कारवान बनाने में सहायक कुछ प्राथमिक..	24
कल्पना के प्रदेश में खत्म हो पर्दा प्रथा	26
हम कभी माता-पिता का/जहां सत्संग होता हो	27
हंसो और हंसाओ	27
मृत्युभोज-एक सामाजिक कलंक	28
सच्चे मानव की तलाश	31
उन्नति का मूलमन्त्र	33
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

वैदिक रीति से हुआ नामकरण संस्कार

श्री रामराज जी नेहरा एवं श्रीमती कृष्णा देवी नेहरा के सुपौत्र का नामकरण संस्कार उनके निवास सैक्टर-6, बहादुरगढ़ में 27 अप्रैल गुरुवार को वैदिक विधि विधान अनुसार कराया गया। आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्यअधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी ने संस्कार कराया। डॉ. श्री हर्षराज व श्रीमती डॉ. सरिता देवी नेहरा को स्वामी जी ने बच्चे के पालन-पोषण सम्बन्धी शिक्षाएं प्रदान की नवजात शिशु के माता-पिता डॉ. दम्पति की इच्छानुसार बालक का नाम लवजोत रखा गया। उपस्थित सभी परिवार के रिश्तेदारों व मित्रों इत्यादि ने बालक को आशीर्वाद प्रदान किया और बालक के लिए मंगल कामना की। स्वामी जी महाराज ने दादा-दादी, माता-पिता तथा सारे परिवार को शुभकामनाएं व बधाई प्रदान की। इस कार्यक्रम में यज्ञ की व्यवस्था श्री ईश्वर सिंह आर्य द्वारा और यज्ञ कार्य ब्र. कर्ण आर्य द्वारा किया गया।

यज्ञ, सत्संग, भजन प्रवचन आयोजित

8 अप्रैल शहीद मालपांडे के शहीदी दिवस पर अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रूखनगर में मासिक यज्ञ-सत्संग भजन-प्रवचन का सुन्दर आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी धर्ममुनि जी ने की। यज्ञ के ब्रह्मा ब्र. ध्रूव शास्त्री रहे और यज्ञमान का आसन श्री सुकर्मपाल जी आर्य व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रूक्मेश आर्या ने ग्रहण किया। सत्संग में आस-पास के क्षेत्र से अनेक माताओं, बहनों, युवाओं व वृद्धों ने भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी सच्चिदानन्द ने आए हुए सभी महानुभावों को मंगल पांडे के जीवन से अवगत कराते हुए राष्ट्रभक्ति के लिए प्रेरित किया। सत्संग के दौरान सुनील आर्य, हरिओम दलाल, रितेश सुकर्मपाल आर्य, आदि अनेक वक्ताओं ने आर्य सज्जनों को सामाजिक कुरीतियों, देशप्रेम, शिक्षा व्यवस्था, गौर रक्षा आदि अनेक विषयों पर अपने सकारात्मक विचारों से प्रभावित किया। इस अवसर पर पं. रमेशचन्द्र वैदिक जी ने बहुत ही सुन्दर प्रेरणात्मक राष्ट्रभक्ति और ईश्वरभक्ति के भजन प्रस्तुत किए। इसके साथ ही ध्रुवदेव शास्त्री, सुखपाल आर्य व आश्रम के बच्चों ने भी सुन्दर भजन प्रस्तुत किए। आश्रम के विशेष सहयोगी सुकर्मपाल आर्य व माता रूक्मेश आर्या जी ने सभी श्रद्धालुओं के लिए बहुत ही बढ़िया पकवान की व्यवस्था की। अंत में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी को आर्शीवचन सुनाए और शांतिपाठ के बाद सभा का समापन हुआ।

श्री सुभाष नागपाल जी दिवंगत

आर्य समाज शिवा जी नगर गुरुग्राम के पूर्व सदस्य श्री सुभाष चन्द्र नागपाल जी 29.04.18 रविवार प्रातः काल 6.30 बजे हृदय गति के रूक जाने से स्वर्ग सिधार गए। वे अपने पीछे अपने सुपुत्र श्री सुधीर (रम्मी) नागपाल सुपुत्री श्रीमती नीरू (मनोज) असीजा, सुपौत्र गर्व नागपाल, सुपौत्री कुमारी रशिता, जायपाल छोड़कर गये है। उनकी पत्नी का देहान्त 20 वर्ष पूर्व हो गया था। उनके निवास स्थान पर तीन दिवसीय 29.04.18 से 1.05.18 तक विशाल शान्ति यज्ञ का आयोजन श्री कन्हैया लाल आर्य उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। 02.05.18 से 8.05.18 तक शान्ति कथा का आयोजन किया गया जिसमें पूरे परिवार एवं सम्बन्धियों को मृत्यु के पश्चात वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी स्त्री आर्य समाज शिवाजी नगर गुरुग्राम की मन्त्राणी एवं श्रीमती वेद मैहत्ता द्वारा दी गई। परिवार ने मरणोपरान्त श्री सुभाष चन्द्र नागपाल जी के नेत्रदान कर पवित्र कार्य किया। आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम फर्रूखनगर के सभी सदस्य कार्यकर्त्ता एवं अधिकारीगण, ट्रस्टी श्री नागपाल जी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते है। परमपिता से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं नागपाल परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति मिले।

विक्रमदेव, व्यवस्थापक, आत्मशुद्धि आश्रम

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्-सारे संसार को श्रेष्ठ बनायें

ओ३म

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु-हमारे वीर विजयी होवें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

अखेराम सरदारोदेवी आत्मशुद्धि आश्रम
एवं
युवा भारत (भारत स्वाभिमान) हरियाणा द्वारा

स्वामी धर्ममुनि जी

आसन, प्राणायाम, व्यायाम-प्रशिक्षण एवं चरित्र-निर्माण संस्कार शिविर

अज्ञान, अन्याय, अभाव, पाखण्ड, नशा व रोग मुक्त
स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान, योग युक्त दिव्य समाज निर्माण हेतु
युवाओं के शारीरिक, मानसिक, आत्मिक एवं चारित्रिक उन्नति के लिए
अखेराम सरदारोदेवी आत्मशुद्धि आश्रम, फर्रुखनगर एवं युवा भारत हरियाणा
के संयुक्त तत्त्वाधान में विशेष शिविर

दिनांक
28 मई से 3 जून 2018

स्थान
अखेराम सरदारो देवी
आत्मशुद्धि आश्रम
फर्रुखनगर

3 जून 2018
शिविर समापन समारोह
प्रातः 08 से 12 बजे तक

युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु शिविर में विशेष अनुभवी, सुयोग्य व्यायाम शिक्षकों द्वारा व्यायाम, आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, सूर्य-नमस्कार, जूडो-कराटे, लाठी-भाला, आत्मरक्षा विज्ञान के साथ-2 व्यक्तित्व विकास, आत्मिक-उन्नति व सफलता प्राप्ति के सूत्रों का विधिवत ज्ञान करवाया जाएगा। इसके अतिरिक्त अग्निशमन, आपदा प्रबंधन, प्राथमिक चिकित्सा का भी क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जायेगा।

शिविर में भाग लेने हेतु शीघ्रातिशीघ्र चलभाष : 9729792992, 9310205779 पर पंजीकरण करवायें

नियम :

1. विद्यार्थी को पूर्ण अनुशासन मे रहना होगा। 2. शिविर मे 14 वर्ष से अधिक आयु के स्वस्थ, अनुशासित, राष्ट्रभक्त, चरित्रवान युवा भाग ले सकते हैं। 3. ऋतु अनुकूल वस्त्र, दो सफेद सैण्डो बनियान, जूत्ते-जुराब, ट्रैकसूट, बेडसीट, डायरी, पैन, मंजन, तेल, साबुन व मच्छरदानी आदि दैनिक उपयोग की वस्तुएँ साथ लायें। 4. शिविरार्थी 28 मई को दोपहर तक शिविर स्थलः- अखेराम सरदारोदेवी आत्मशुद्धि आश्रम, खेड़ा खुर्रमपुर रोड़, फर्रुखनगर पहुँचे। 5. शिविर शुल्क मात्र 200 रु देय होगा।

संरक्षक :- स्वामी धर्ममुनि जी मुख्यधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम

शिवराध्यक्ष :- स्वामी विश्वमुनि जी बाछौद

निवेदक :- मनमोहन (जिला प्रभारी युवा भारत), विनोद योगी (योग प्रचारक), विजय जी (प्रखण्ड युवा प्रभारी)

संयोजक :- स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, संचालक :- ARSD आत्मशुद्धि आश्रम फर्रुखनगर एवं प्रदीप डागर (प्रांतीय प्रभारी युवा भारत)

व्यवस्थापक :- आचार्य प्रवीण शास्त्री, आचार्य विक्रम शास्त्री नैष्ठिक

विशेष :- शिविर समापन समारोह में 3 जून, 2018 को आप सभी सहपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

वेद सन्देश

वर्णश्रम-मर्यादा की प्रकाशित उषा

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

क्षत्राय त्वं श्रवसे त्वं महीयै,
इष्टये त्वमर्थमिव त्वमित्यै।
विसदृशा जीविताभिप्रचक्षे,
उषा अजीगर भुवनानि विश्वा॥

ऋग् 1.113.6

ऋषिः **कुत्सः आङ्गिरसः**। देवता **उषाः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

(**त्वं**) एक के प्रति (**क्षत्राय**) क्षत्रियोचित कर्म के लिए या त्रुटि-पूर्ति के लिए, (**त्वं**) एकके प्रति (**श्रवसे**) अन्न-धन के उपार्जन के लिए या विद्याश्रवण के लिए, (**त्वं**) एक के प्रति (**महीयै इष्टये**) महिमामय यज्ञ करने-कराने के लिए, (**त्वं**) एक के प्रति (**अर्थम् इव**) द्रव्य के समान (**इत्यै**) संचार करने के लिए (इस प्रकार) (**विसदृशा**) विभिन्न (**जीविता**) जीवन-व्यापारों को (**अभिप्रचक्ष**) प्रकाशित करने के लिए (**उषाः**) उषा ने (**विश्वा भुवनानि**) समस्त भू-भागों को (**अजीगः**) निगल लिया है, अपने प्रकाश के घेरे में ले लिया है।

देखो, प्राची में खिलती हुई उषाओं ने समस्त भू-भागों को निगल लिया है, अपनी ज्योति से व्याप्त कर लिया है। रात्रि के अन्धकार में सोये पड़े हुए सब लोग नींद से जाग कर, नित्य-कर्मों से निवृत्त हो, अपने-अपने वर्ण की मर्यादा के अनुसार कार्यों में संलग्न हो गये हैं। सेना में दीक्षित हुए क्षत्रिय सैन्य-शिविरों में क्षात्र-धर्म का अभ्यास कर रहे हैं। कुछ क्षत्रिय रण-दुन्दुभि बजाकर आक्रांता शत्रु को परास्त करते हुए राष्ट्र की रक्षा कर रहे हैं। कुछ क्षत्रिय राष्ट्र के अन्तः-शत्रुओं की धर-पकड़ कर रहे हैं। वैश्य-जन कृषि, वाणिज्य, पशुपालन के द्वारा अन्न और धन का उपार्जन कर व्यक्तिगत तथा राष्ट्रिय सम्पत्ति को बढ़ा रहे हैं। ब्राह्मण-वर्ग महती इष्टियों को, महिमामय यज्ञ-यागों को, करने-कराने में व्यापृत हैं। सेवक शूद्र-जन स्वामी से प्रेरित हो अपेक्षित पदार्थ को लाने-ले जाने के लिए वैसे ही गमनागमन कर रहे हैं, जैसे समाज में अर्थ (द्रव्य) एक के पास से दूसरे के पास जाता है और देखो, उषा के दिव्य प्रकाश में आश्रम-मर्यादा का भी पालन हो रहा है। ये वानप्रस्थ जन गृह त्यागकर वन के एकान्त में तपस्या करते हुए आत्म-निरीक्षण-पूर्वक अपनी त्रुटि-पूर्ति (क्षतन्त्र) का कार्य कर रहे हैं। ब्रह्मचारी वर्ग गुरुकुलों में आचार्य मुख से विद्या-श्रवण कर रहे हैं। गृहस्थ जन बड़े-बड़े यागों का आयोजन कर रहे हैं। संन्यासीगण परिव्राजक बन जन-जन पर कर उपदेशामृत की वर्षा करने हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण कर रहे हैं। इस प्रकार उषा विसदृश जीवन-व्यापारों को प्रकाशित करती हुई अपने-अपने वर्णाश्रम धर्मो के पालन में मनुष्यों का सहयोग कर रही है। आओ, इस ज्योतिर्मयी उषा से प्रकाश और प्रबोध पाकर हम भी अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हों।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा) पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

परमात्मा की प्राप्ति सात्विक भोजन से

-स्वामी धर्ममुनि जी

वेद-दर्शन-स्मृति आदि आर्ष ग्रन्थों में और समस्त विश्व के सभी मतों की पुस्तकों में और महापुरुषों ने प्रत्येक प्राणी में **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** अपनी आत्मा के समान समझने-देखने के लिए कहा है और अहिंसा को परम धर्म माना है। योगदर्शन के रचयिता महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का वर्णन करते हुए सर्वप्रथम पांच यमों को रखा और यमों में भी सर्वप्रथम अहिंसा धर्म का पालन करने के लिए कहा। वेदों के अद्वितीय ज्ञाता, आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द जी द्वारा आर्यो के लिए नित्य नियम पालन करने के लिए पंच महायज्ञों की व्यवस्था की, सर्वप्रथम ब्रह्मयज्ञ 'वाक् वाक्' द्वितीय देवयज्ञ 'वांड्म आस्य अस्तु से प्रारम्भ किये, तृतीय 'बलिवैश्यदेव यज्ञ' में प्राणीमात्र को उनका भाग देकर खाने की आज्ञा दी, चतुर्थ पितृ यज्ञ और पंचम अतिथियज्ञों में अहिंसा धर्म पालन करने के लिए ही सेवा करने और खिलाकर खाने का नियम बनाया है।

पाठक बन्धुओं! सभी मतों के प्रणेताओं ने अहिंसा, क्रूरता, असत्य, क्रोध, द्वेष व अन्य जीवों को अकारण कष्ट व पीड़ा पहुंचाने को पाप बताया और अहिंसा, दया, सत्य, करूणादि को धर्म माना है। अधिकांश सभी मतों में विस्तार से मांसाहार के दोष बताएं गये हैं। साथ ही निरीह प्राणियों की हत्या के लिए निषेध किया है, क्योंकि पशु-पक्षी एक ओर प्राकृतिक सन्तुलन बनाए रखने में सहायक होते हैं, साथ ही यह पशु-पक्षी मानव का तनिक सा प्रेम व दया पाकर मनुष्यों के प्रति वफादार बने रहते हैं। अनेकों उदाहरण मिलते हैं, पशु और पक्षियों की वफादारी के यहां लिखना सम्भव नहीं है लेख बढ़ने के भय से।

इस्लाम के सूफी सन्तों ने सादा व नेक जीवन बिताने, सादा भोजन करने व मांस न खाने पर बहुत बल दिया है। वे सभी आत्मसंयमी शाकाहारी भोजन करने एवम् सभी जीवों के प्रति प्रेम रखते थे। पौराणिक धर्म पुस्तकों में सभी जीवों को ईश्वर का अंश माना गया है। ईश्वर-जीव की अलग-अलग सत्ता है जीव टुकड़ा नहीं है। अहिंसा, दया, प्रेम, क्षमादि गुणों का वर्णन करते हुए मांसाहार का निषेध किया गया है। सिख मत में गुरुवाणी में गुरुभक्तों के लिए कहा गया है- **'हंसा हीरा मोती चुगया, बगुला मालण जावै'** अर्थात् हंसों की खुराक मोती है और बगुलों की मछली, मेंढक आदि। सन्त कबीर जी ने अहिंसा व दया की शिक्षा दी है, मांस खाने की निन्दा की है। सिखों के सभी गुरुवों ने हिंसा न करने का आदेश स्पष्ट रूप से दिया है। अब आप विचारों कि जब हिंसा करना ही मना है तो मांस, मछली, अण्डे आदि खाने का प्रश्न ही नहीं उठता। इसीलिए सभी गुरुद्वारों में लंगर-शाकाहारी भोजन ही बनता है, परोसा जाता है। जैन मत में जहां जानवरों को शारीरिक कष्ट पहुंचाना, मारना एवं उनपर अधिक भार लादना और मांसाहार की सोच को भी पाप माना गया है। यहां तक कहा गया है कि अगर शाकाहार भोजन करेंगे तो आपको जीवन शक्ति मिलेगी।

महर्षि दयानन्द जी ने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि मांसाहार से मनुष्य का स्वभाव हिंसक (तमोगुणी) हो जाता है। महाराज कृष्ण गीता में कहते हैं-

सत्त्वांत्संजायते ज्ञानं रजसो लोभएवाच।
प्रमादमोहौ तमसो भवतऽज्ञानमेव च॥

गीता 14.17

अर्थात् सत्त्वगुण से ज्ञान उत्पन्न होता है, रजो गुण से लोभ उत्पन्न होता है तथा तमोगुण से प्रमाद और मोह उत्पन्न होते हैं। और अज्ञान भी उत्पन्न होता है। आगे सत्रहवें अध्याय में मानव स्वभावानुसार श्रद्धा, तप, दान और यज्ञादि सभी तीन-तीन प्रकार के सात्विक, राजसी और तामसी बताए गए हैं। सात्विक मनुष्य देव-ईश्वर की पूजा करते हैं, राजसी पुरुष यज्ञ-राक्षसों का तथा तमोगुणी मनुष्य भूत-प्रेतों का पूजन करते हैं। घोर कर्म हिंसा पशु-बलि आदि देते हैं। श्रद्धालु और अश्रद्धालु सतोगुणी-रजोगुणी और तमोगुणी मनुष्यों की पहिचान उनके भोजन की रूचि से हो जाती। उपरोक्त श्रद्धा आदि की तरह आहार भी महाराज कृष्ण ने तीन प्रकार का बताया है-

आयुः सत्वबलारोग्य सुख प्रीति किवर्धनाः।
शस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृधा आहारा सात्विक प्रियाः॥

गीता 17.8

आयु, सत्व, बल, आरोग्य, सुख तथा रसास्वादन की शक्ति बढ़ाने वाले रस युक्त, चिकने, स्थिरता प्रदान करने वाले हृदय शक्तिवर्धक आहार सात्विक वृत्ति के लोगों को प्यारे होते हैं।

कट्वम्ललवणात्युष्णंतीक्ष्णारू क्षषिदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःख शोकामय प्रदाः॥

गीता 17.9

कटु अर्थात् चटपटे, खट्टे, नमकीन, बहुत गरम, तीक्ष्ण, रूक्ष और जलन पैदा करने वाले आहार रजोगुणी लोगों को प्यारे होते हैं, ये आहार दुःख शोक और रोग के देने वाले हैं।

शातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपिं चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्॥

गीता 17.10.

जो सारहीन, रसहीन, दुर्गन्धयुक्त, बासी, झूठा और अपवित्र भोजन है वह तामस प्रकृति के वालों को प्यारा होता है। कहावत है-जैसा खाए अन्न वैसा होवे मन, जैसा पिये पानी वैसी बोले वाणी और जैसा खाये घी वैसी हो धी-बुद्धि आज लोगों का आहार दूषित हो गया है, पानी भी कैम्पा कोला कोका आदि का पिया जाता है। ऐसी ही वाणी बोलते हैं, घृत डालडा बनावटी रखते हैं। इसलिए बुद्धि भी बनावटी हो गई है। मनुजी ने कहा-'**वस्त्रपूतं जलं पिबेत् सत्यपूतं वदेत वाक्यम्, मनः पूतम् समाचरेत**। छान्दोग्योपनिषद् के ऋषि लिखते हैं-**आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्व शुद्धौ ध्रुवास्मृतिः। स्मृतिर्लभ्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षः॥**

छा. उ. 7.26.2

भोजन की पवित्रता होने पर अन्तःकरण में निर्मलता आती है, अन्तःकरण के निर्मल होने पर स्थिर-निश्चल होने पर स्मरण शक्ति बढ़ जाती है, स्मरण शक्ति बढ़ने से सब गांठों बन्धनों से छूट जाना-मोक्ष होता है।

प्रभु प्राप्ति के इच्छुक बन्धुओं! संक्षेप में, साररूप में ऐसा समझें-आहार की शुद्धि से मन चित्त की शुद्धि होती है और चित्त की शुद्धि होने पर बुद्धि शुद्ध होती है। अतः बुद्धि शुद्ध होने से आत्मा शुद्ध होती है और आत्मा शुद्ध होने से परमात्मा की प्राप्ति होती है। जीवात्मा जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूट जाती है। **बस आत्मशुद्धि आश्रम स्थापना एवं आत्मशुद्धि पथ प्रकाशन का यही उद्देश्य है कि आपका मार्गदर्शन किया जाए जिससे आप जन्म-मृत्यु के चक्कर से छूटकर आत्मा-परमात्मा का साक्षात्कार कर मोक्ष का आनन्द प्राप्त कर सकें।**

- स्वामी धर्ममुनि जी महाराज

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं–

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याह्न का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड़, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! –व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

आत्मा अविनाशी तथा इसका शरीर नाशवान है

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम मननशील होने से मनुष्य कहलाते हैं। मनन हम सत्यासत्य व उचित अनुचित का ही करते हैं। सत्य व उचित बातों का आचरण करना धर्म और असत्य व अनुचित बातों का आचरण अधर्म होता है। धर्म पर चलना मनुष्य का कर्तव्य है। इसलिए कि इससे हमें सुख मिलेगा और अधर्म का आचरण करेंगे तो वर्तमान नहीं तो भविष्य में दुःख अवश्य ही भोगना पड़ेगा। इसका कारण यह समझ में आता है कि हम जो कर्म करते हैं उसके संस्कार मन व आत्मा पर पड़ते हैं। यह संसार हमारी रचना नहीं है। परमेश्वर की है और यह सृष्टि परमात्मा ने केवल हमारे लिए ही नहीं बनाई है। यह संसार ईश्वर ने सभी जीवात्माओं के लिए उनके जन्म जन्मान्तरों के कर्म फलों के भोग के लिए बनाया है। ईश्वर का स्वरूप सच्चिदानन्द है। ईश्वर सत्य अर्थात् सत्तावन है। असत्य उसे कहते हैं जिसकी सत्ता न हो।

जीवात्मा भी सत्तावान होने से सत्य है। अतः सत्यस्वरूप जीवात्मा और परमात्मा दोनों ही सत्य कर्म करने वाले हैं। जीवात्मा जब सत्य कर्मों का त्याग कर प्रलोभन व अविद्यावश असत्य का आचरण करते हैं तो यह ईश्वर की दृष्टि में अधर्म होता है जिसका उसे फल मिलता है जो दुःख रूप होता है। बीज जब वृक्ष रूप में बढ़ता है व उस पर फल लगते हैं तब फलों के पकने पर मनुष्यों व पक्षियों आदि द्वारा उसका भोग होने पर उसकी सार्थकता व पूर्णता होती है। इसी प्रकार मनुष्य जीवन की सार्थकता भी विद्या व बल की प्राप्ति व उससे दूसरे मनुष्यों व इतर प्राणियों को सुख लाभ कराने में ही होती है। यदि हम किसी पीड़ित व दुःखी मनुष्य की सहायता कर उसे कुछ सुख नहीं पहुंचा सकते तो हमारा मनुष्य कहलाना सार्थक नहीं अपितु निरर्थक प्रतीत होता है। ऋषि दयानन्द जी ने लिखा है कि मनुष्य वही है जो मननशील होकर अन्यों के सुख दुःख व हानि लाभ को समझे। दूसरों को सुख देना ही मनुष्य का कर्तव्य है और इसी से मनुष्य को भी सुख मिलता है। उसका यश, बल, आयु व विद्या भी बढ़ती है। अतः वेद आदि का स्वाध्याय कर मनुष्यों को ईश्वर प्रेरित सद्कर्मो को ही करना चाहिए।

विज्ञान का नियम है कि संसार में न तो कोई पदार्थ वा वस्तु बनाई जा सकती है और न ही नष्ट की जा सकती है। मूल पदार्थ अनादि व नित्य होते हैं। ईश्वर, जीवात्मा और मूल प्रकृति भी अनादि पदार्थ हैं। इनकी कभी उत्पत्ति नहीं हुई है। यह कभी नष्ट भी नहीं होंगे। उत्पन्न पदार्थों का नाश अर्थात् अवस्था परिवर्तन हुआ करता है। जीवात्मा चेतन व अभौतिक पदार्थ है। चेतन पदार्थों का आवश्यक गुण ज्ञान व कर्म होता है। प्रकृति जड़ पदार्थ है। जड़ पदार्थों में जड़ता होती है। इस कारण उनमें ज्ञान व विवेक पूर्ण कर्म नहीं होते। वह चेतन सत्ता जीवात्मा व परमात्मा के अधीन रहकर कार्य करती है। हमारा शरीर भौतिक पदार्थों अग्नि, पृथिवी, जल, वायु और आकाश से मिलकर बना है। ईश्वर ने जीवों के लिए मूल प्रकृति में विकृति उत्पन्न कर अपनी सर्वशक्तिमान व सर्वज्ञता से जीवों की आवश्यकता के अनुरूप उन्हें सुख प्रदान करने के लिए यथापूर्व सृष्टि की रचना की है। जीवों को सुखों का भोग व उन भोगों की प्राप्ति के लिए शुभ व अशुभ करने की आवश्यकता होती है। इसके लिए सभी जीवात्माओं को शरीरों की आवश्यकता होती है। यह शरीर ईश्वर प्रकृति के पांच भौतिक पदार्थों से बनाकर जीवों को उपलब्ध कराता है।

शरीरों की प्राप्ति में ईश्वर के अतिरिक्त माता-पिता की भी आवश्यकता होती है। यह ईश्वरीय नियम है जिनका नियन्ता वा पालक ईश्वर ही है। यह भौतिक शरीर जीवात्मा का साधन है।

जीवात्मा का साध्य तो परमेश्वर की प्राप्ति व मोक्ष प्राप्त करना है जो ईश्वर के साक्षात्कार से होता है। ईश्वर साक्षात्कार सद्ज्ञान की प्राप्ति व उपासना आदि साधना से होता है जिसे जीवात्मा शरीर को साधन बनाकर करता है। हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि यह शरीर एक शिशु के रूप में उत्पन्न होता है और 100 वर्ष की आयु पूर्ण करने से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। सृष्टि के आरम्भ से संसार में असंख्य मनुष्य उत्पन्न हुए। वह सभी इस नियम अर्थात् 100 वर्ष वा उससे कम आयु में मृत्यु को प्राप्त हो गये। यह क्रम अद्यावधि जारी है और हमेशा रहेगा। इसलिए कि यह भौतिक शरीर इससे अधिक जीवित नहीं रह सकता। कुछ थोड़े से अपवाद हैं अर्थात् कुछ लोग 100 वर्ष से भी अधिक आयु तक जीवित रह सकते हैं परन्तु अमर तो कोई शरीर नहीं होता। इसका नाश अवश्य ही होता है, होता रहा है व आगे भी होता रहेगा।

हमने लिखा है कि शरीर आत्मा का साधन है। शरीर को एक प्रकार का रथ कह सकते हैं। जिस प्रकार रथ का उद्देश्य अपने रथी को किसी लक्ष्य पर पहुंचाना होता है उसी प्रकार से इस **शरीर रूपी रथ का उद्देश्य जीवात्मा को परमात्मा का साक्षात्कार करा कर मोक्ष प्राप्त कराना है। यह लक्ष्य वेदाध्ययन, अविद्या की निवृत्ति और अष्टांग योग की साधना से प्राप्त होता है।** जिस प्रकार यात्री लक्ष्य की ओर जाते हुए अनेक स्थानों पर रूक कर विश्राम करता है और आगे बढ़ता जाता है। उसी प्रकार से जीवात्मा की मोक्ष की यात्रा में अनेक शरीरों में रहकर साधना करते हुए आगे बढ़ना पड़ता है।

जिस प्रकार हम यात्रा में किसी स्थान पर रूकते हैं तो अगले दिन उसी स्थान से यात्रा आरम्भ कर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं, इसी प्रकार से इस जीवन में हम जो साधना कर लेंगे तो वह हमारे अगले जीवन में काम आयेगी और हम उससे आगे बढ़ेंगे। यदि अगले जीवन का हमने किसी कारण सदुपयोग नहीं किया तो हमारे पूर्व जन्म की साधना भी न्यून व नष्ट हो सकती है। अत: हमें अपनी आत्मा व परमात्मा के सत्य स्वरूप को जानकर व मनुष्य जीवन के उद्देश्य को समझकर जीवन व्यतीत करना है। यही वेद और शास्त्रों की शिक्षा है। हमें सावधानी से वेद मार्ग पर चलना है। यदि इस जन्म में लक्ष्य न भी प्राप्त होगा तो अगले जीवन में इस जन्म की साधना तो काम आयेगी ही। कोई एक कक्षा में फेल हो जाता है तो उसे उसी कक्षा में रखा जाता है। पास होने पर अगली कक्षा में चढ़ा दिया जाता है। फेल होने पर उसे निचली कक्षा में उतारा नहीं जाता। इस जन्म के अच्छे कर्मों के परिणामस्वरूप यदि हमें अगले जन्म में मनुष्य जीवन भी मिल गया तो हम पुन: साधना कर सकेंगे।

हमारा शरीर नाशवान है। किसी दिन व कुछ समय बाद इसका पतन व नाश होना ही है। इसलिए हमें शारीरिक सुखों की प्राप्ति पर ध्यान न देकर अपनी आत्मा के सुख व उन्नति पर ही ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। शारीरिक सुख का परिणाम दु:ख होता है। हमें जितना शारीरिक सुख प्राप्त होगा कालान्तर में उसके प्रभाव से उसी मात्रा में कुछ कम व अधिक भी दु:ख प्राप्त हो सकता है। अत: हमें आत्मा का सुख प्राप्त करने का प्रयतन करना चाहिए। जो उपासना व वेद ज्ञान से ही मिलता है। ऐसा हम समझते है। पाठक स्वयं विचार करें और अपनी प्रतिक्रिया से हमें लाभान्वित करें।

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम ''दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर''। रेल-बस आदि की चौबीस घण्टे सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

गतांक से आगे

सफलता का मार्ग

- प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

जीवन की सच्चाई यह है कि जैसा हमारे मन में आता है, वैसा ही हम बोलते हैं, और जैसा हम बोलते हैं, वैसा ही हम कर्म भी करते हैं। ऋषियों ने बताया है-इसका भाव यह हुआ कि हमारे कृत-कार्यों का बीज हमारे मानसिक-चिन्तन में बो दिया जाता है। अत: हम इस जीवन यज्ञ में पुण्यमयी मानसिक आहुतियाँ दें। अर्थात् हम अपने मानसिक जीवन में न पाप चिन्तन करें, न पाप के संकल्प उठने दें। इसके लिए मन्त्र में एक प्रार्थना की गई है कि हमारे जीवन यज्ञ में सुमनस्कता सम्पन्न दिव्य भावना वाले देव पुरुष आवें और हमें दिव्य-भावना का ही उपदेश करें।

दुर्योधन को सलाह देने वाला कर्ण और शकुनि था। दुर्योधन यदि कभी न्याय-संगत सोचता भी था तो कर्ण और शकुनि उसके चिन्तन को ईर्ष्या-द्वेष से भर देते थे। ऐसे कुटिल लोग हमारे जीवन में न आवें। प्रार्थना यह है कि हमें जिनका संग-साथ मिले व सुचरित्र, सुविचारी, हों। हमें जो उपदेश मिले वह सुमनस्कता, सदाशयता का उपदेश मिले।

हमारे यज्ञ-मय जीवन को सफल बनाने के लिए भगवान ने हमारे भरण-पोषण के लिए दिव्य गुण सम्पन्न आँख और मुख दिए हैं। न हम कुदृश्य देखें, न कुखाद्य खाएँ, न दुष्ट श्रवण करें और देवताओं से यही प्रार्थना करें कि हमें दिव्य उपदेश मिलें जिससे विश्वकर्मा द्वारा निर्मित हमारा जीवन-यज्ञ सुमन और सुफल हो।

'यन्मसा मनुते, तद्वाचा वदति।
यद् वाचा वदति, तत्कर्मणा करोति॥
यत् कर्मणा करोति, तदभि सम्पद्यते॥''

अर्थात् हम मन में जैसा सोचते हैं वैसा ही वाणी से बोलते हैं। जैसा बोलते है, वैसा ही कर्म करते हैं। जैसा कर्म करते हैं वैसा ही हमारा जीवन हो जाता है।

हमारा जीवन एक यज्ञ है। इसके रचयिता, विश्वकर्मा परमेश्वर हैं। मुख, नाक, आंख आदि सभी अंग-देवपूजा, संगतिकरण और दान से सम्पन्न हों।

शरीर में प्राण सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। पाँचों कर्मेन्दियाँ, पाँचों, ज्ञानेन्द्रियाँ और मन, बुद्धि, चित्त, अहंकर, चारो अन्तःकरण प्राण के सहयोग पर ही अपना-अपना कार्य कर पाते हैं। प्राण सबमें ज्येष्ठ, श्रेष्ठ और वरिष्ठ है।

उपनिषद् में एक कथा आती है। एक बार इन्द्रियों ने अपनी महिमा का बखान करना आरम्भ कर दिया। आँख, कान, नाक सभी अलग-अलग कहने लगे कि मैं ही सबसे बढ़कर हूँ। उनका अहंकार देखकर प्राण ने कहा कि तुम लोग मोह में मत पड़ो, हमारे सहयोग के बिना तुममें से कोई भी कुछ न कर पाएगा। जब इन्द्रियों ने प्राण की बात पर अविश्वास किया तो प्राण ने कहा कि जिसका मन करे वह शरीर छोड़कर चला जाए। आँख चली गई, पर शरीर चलता रहा। कान चला गया तो भी शरीर चलता रहा। बारी-बारी से सारी इन्द्रियाँ गई और आयीं पर शरीर चलता रहा। अब प्राण ने कहा कि अब आप लोग सँभलकर रहिए, अब मैं जा रहा हूँ। जैसे ही प्राण जाने लगा, आँख चिल्लाई-हमको कुछ नहीं दिखाई पड़ रहा है। कान बोला-मैं भी नहीं सुन पा रहा हूँ, सारी इन्द्रिया प्राण से प्रार्थना करने लगीं-आप मत जाइए, हमारा कल्याण करिए, हमारी रक्षा करिए। वे प्राण की स्तुति करने लगीं।

'प्राणस्येदं वशे सर्वं त्रिदिवे यत्प्रतिष्ठितम्।
मातेव पुत्रान् रक्षस्व श्रीश्च प्रज्ञां च विधेहि न इति॥''

अर्थात् तीनों लोकों में जो कुछ है वह सब कुछ प्राणों के ही वश में है। हे प्राणदेव! जैसे माता पुत्रों की रक्षा करती है, वैसे ही आप हमारी रक्षा करिए और हमें श्री, कांति, प्रज्ञा, सब प्रदान करिए। आप हमारे पूज्य हैं, हम आपके अधीन हैं।

यह हुआ जीवन यज्ञ में देव-पूजन का भाव। अब थोड़ा सा संगतिकरण और दान पर भी विचार करते हैं।

प्रभु ने हमारे शरीर में अद्‌भुत संगतिकरण किया है। एक उदाहरण लेते हैं-आँखों ने एक प्यारा सा, सुन्दर आम देखा। आँखों ने मन को सूचना दी, चित्त ने आम की सुगन्ध, स्वाद और स्पर्श को संबद्ध इन्द्रियों को सूचित किया। नाक, रसना आदि में स्फुरण हुआ और संबन्धित ग्रन्थियों से प्रतिक्रिया आरम्भ हो गई। आम खाया गया, पेट में जठराग्नि ने

पचाया, रक्त, मांस, मज्जा, ओज, तेज सब अपनी-अपनी जगह पर अपना अंश प्राप्त कर रहे हैं और जो उपयोग में न आ सकता वह मल-मूत्र रूप में बाहर चला गया। कैसा अद्‌भुत समन्वय सामंजस्य और दान का उदाहरण है। कोई अंग कुछ संचय नहीं करता। सब अपना कार्य करके आगे के लिए दान कर देते हैं।

हृदय तो अशुद्ध रक्त का हरण करके शुद्ध करता है, शुद्ध रक्त को सारे शरीर को दान करके गति पहुँचाता है। हृदय के तीनों अक्षर बतातें हैं-हृ-हरण करना, द-दान करना, य-गति करना। यह भी संगतिकरण और दान का अद्‌भुत उदाहरण है।

शरीर के यज्ञ रूप को विश्वकर्मा ने अद्‌भुत बनाया है। कल्पना करते हैं कि शरीर में आँख, कान, नाक, पेट या नाखून-कहीं पीड़ा हो रही है। वैद्य या डॉक्टर ने एक छोटी सी गोली खाने को दी और उसका प्रभाव शरीर के उसी स्थान विशेष पर पड़ता है और पीड़ा दूर हो जाती है। यह भी विश्वकर्मा भगवान की व्यवस्था में समन्वय और दान का कितना सुन्दर उदाहरण है।

एक्यूप्रेशर के सिद्धान्त से हाथ और पैर के विशेष-विशेष बिन्दुओं से सम्पूर्ण शरीर के विशेष-विशेष अंगों का संबंध प्रकट होता है। यह भी शरीर के विभिन्न अंगों में समन्वय सामंजस्य का विलक्षण स्वरूप है।

हमारा जीवन परमेश्वर ने यज्ञ रूप बनाया है और परमेश्वर के इस यज्ञ को हम देवताओं का दिव्य यज्ञ बनाएँ, यह हमारा परम पुनीत कर्त्तव्य है।

शाश्वत सत्य

- ऋषि राम कुमार

मैं हूँ मौत पूर्णशाश्वत सच
मेरा कार्य मानव मात्र का कल्याण
मेरी किसी से द्वेष भावना नहीं
मैं अपना कार्य समय पर कार्यान्वित करती हूँ
जिस प्रकार आप अपने काम के प्रति ईमानदार हैं
आप अपने अधिकारी की बात को मानते हैं,
मैं भी सर्वशक्तिमान प्रभु की ही बात का पालन करती हूँ
आपके कार्य में बेईमानी या रिश्वत हो सकती है
हमारे किसी काम में भ्रष्टाचार नहीं होता,
हमारे डिपार्टमैंन्ट में सभी जाति और धर्म बराबर हैं
हमारा कार्य चौबीस घन्टे चलता है
मेरी किसी से कोई दुश्मनी नहीं मेरा कार्य 'आज्ञा पालन'
कृपया मुझे गालियां न दें- न दोष लगायें
यह शरीर नश्वर है आपको एक दिन त्यागना है
मैं आपके भले के लिए काम करती हूँ,
अगर मेरी उपस्थिति न हो
तो दुनिया में अफरातफरी फैल जाये।
मेरी आपसे हाथ जोड़ कर नम्र प्रार्थना
आपकी लम्बी उमर की कामना
मैं समय से पहले नहीं आती
यह संसार झूठ का पुलिन्दा है
सिर्फ मैं ही हूँ-पूर्ण सत्य मौत

- 246/4, मॉडल टाऊन, गुड़गांव (हरियाणा)

बड़ा अगर बनना है

- श्रीमती सुदेश सन्दूजा

बड़ा अगर बनना है तुमको।।
घिसी-पिटी सब बातें छोड़ो
नये समय से रिश्ता जोड़ो
सुख में करो कभी मत आलस
दुःख में डर कर आँख न मोड़ो।।
बड़ा अगर बनना है तुमको।।
कोई नहीं बड़ा या छोटा
सारे हैं ईश्वर के बच्चे
बड़े अगर बनना है तुमको
बनो दयालु मेहनती सच्चे।।
बड़ा अगर बनना है तुमको।।
अच्छी बातें बड़ों की मानो
खुद समझो सबको समझाओ
अपने बल पर करो भरोसा
हिम्मत बांधो आगे आओ।।
बड़ा अगर बनना है तुमको।।
जो भी काम तुम्हें करना है
आज करो कल पर मत छोड़ो
नये समय से रिश्ता जोड़ो
घिसी-पिटी सब बातें छोड़ो।।

ओ३म नाम आदित्य है, तमसे है अति दूर,
जो उसको डर धार ले, जीवन मुक्त हजूर।

महारानी द्रौपदी

- राजवीर जी आर्य ट्रस्टी आश्रम

हम इस तरह की घटना बिना सोचे विचारे या बिना प्रमाण के नहीं लिख रहे हैं। देखिए हम उस समय के राजा-महाराजाओं के विवाहों पर प्रमाण सहित प्रकाश डाल रहे हैं, जिससे हमारी उपरोक्त विचारधारा को प्रबल समर्थन मिल रहा है। महाराजा शान्तनु के सत्यवती से विवाह उपरान्त दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमें बड़ा चित्राग्द जो कि बड़ा बलवान था लेकिन युद्ध के मध्य वह मारा गया, उसका छोटा भाई विचित्र वीर्य को किशोर अवस्था में ही राजगद्‌दी पर बैठा दिया गया। राज्य का कामकाज स्वयं सत्यवती देखती थी और रक्षा का सारा भार भीष्म के कंधों पर था। कुछ समय पश्चात काशीराज की तीन कन्याओं का स्वयंवर था। सारी पृथ्वी के राजा उन कन्याओं की प्राप्ती के उद्‌देश्य से गये हुए थे। अपने भाई के विवाह के उद्‌देश्य से भीष्म भी उस स्वयंवर में पहुंच गये। भीष्म अपने बल से तीनों कन्याओं का हरण कर लाया। सभी राजाओं से भीष्म का भयंकर युद्ध हुआ। शाल्व नरेश तो आखिर तक लड़ता रहा किन्तु भीष्म ने उसे जिन्दा ही छोड़ दिया। तीन कन्याओं में से एक ने भीष्म से कहा कि मैं तो अपने हृदय से शाल्व नरेश को वर चुकी हूँ और शाल्व नरेश भी मुझे चाहते हैं, तो भीष्म ने उसे शाल्व नरेश के पास भेज दिया और दोनों युवतियों ने विचित्रवीर्य से शादी करने की सहमति प्रकट की, जिससे उन दोनों का विवाह विचित्रवीर्य से कर दिया गया, इसमें प्रमाण देखिए-

आत्मनः प्रतिरूपोऽसौ लब्धः पतिरितिस्थिते।
विचित्रवीर्य कल्याण्यौ पूजयामासतुः शमे॥

6 अध्याय (60)

(अर्थात् वह दोनों सुन्दरी अम्बिका और अम्बालिका इस बात से संतुष्ट हुई कि हमें अपने अनुकूल पति मिल गया है, विचित्रवीर्य की मन से सेवा करने लगी।

तीसरी नवयुवती ने जिसका नाम अम्बा था, अपनी इच्छा शाल्व से विवाह करने की प्रकट की तो उससे जोर जबरदस्ती नहीं की गई और उसे प्रसन्नता से शाल्व के पास भेज दिया गया। हमारा यहां कहने का यही तात्पर्य है कि कोई आवश्यक नहीं था कि जो स्वयंवर जीते लड़की उसी के साथ

विवाह करे। परन्तु इसमें उसकी सहमति को विशेष बल दिया जाता था। इसीलिए हमारा मानना है कि द्रौपदी ने युधिष्ठिर के साथ विवाह करना स्वीकार कर लिया था और वह एक पतिव्रता स्त्री थी। इसमें आगे भी एक बिन्दु पर विचार कीजिए और वह है कि अर्जुन, भीम, नकुल और सहदेव के विवाहों का वर्णन मिलता है, लेकिन द्रौपदी के अतिरिक्त युद्धिष्ठिर का अन्य कोई विवाह महाभारत के अन्दर नहीं पाया जाता। यह बात भी सिद्ध करती है कि भले ही स्वयंवर की शर्त अर्जुन ने जीती थी लेकिन द्रौपदी का विवाह युद्धिष्ठिर से ही हुआ था। युद्धिष्ठिर उस समय का सबसे सुन्दर और लम्बी कद काठी के व्यक्तित्व का स्वामी था। जिसका वर्णन महाराजा धृतराष्ट्र व संजय उवाच में मिलता है। इसीलिए हमारा मानना है कि पाँच पतियों वाला मिथ्या आरोप उस महारानी पर लगाना उसका अपमान करना है।

महाभारत का युद्ध द्रौपदी की देन:- एक और आरोप उस महारानी पर मढ़ा जाता है कि महाभारत का युद्ध जिसमें 42 लाख 23 हजार 930 सैनिक राजाओं-महाराजाओं सहित वीर गति को प्राप्त हुए (पढ़िए श्रुति सौरभ) यह सब द्रौपदी के कारण हुआ। इसके पीछे वे दलील देते हैं कि जब द्रौपदी ने अपने केश छुड़वाकर वहीं प्रतिज्ञा की, कि इन केशों को दुःशासन के लहू से धोकर ही बाधूगी। दूसरा कर्ण ने उसको चरित्रहीन तक कहा। सभी के अन्दर उसे निर्वस्त्र तक करने का प्रयास किया

गया। इतना अपमान होने और दर-दर की ठोकरें खाने के कारण द्रौपदी उन पाँचों भाईयों को बराबर युद्ध करने के लिए प्रेरित करती रहती थी। प्रतिशोध की प्रबल भावना सदैव उसके हृदय में धधकती रहती थी। यद्यपि युद्धिष्ठिर युद्ध नहीं चाहते थे, यह तो केवल द्रौपदी ही थी जो युद्ध के लिए पाण्डवों को विवश कर रही थी। हम उपरोक्त बातों से कतई सहमत नहीं हैं और अपना पक्ष तथ्यों के आधार पर रख रहे हैं, जो कि निम्नलिखित हैं:-

धृतराष्ट्र व पाण्डु दोनों भाईयों का तो आपस में बड़ा स्नेह व प्रेम रहता था। महाभारत के अन्दर धृतराष्ट्र के 100 पुत्रों का नाम सहित वर्णन पाया जाता है। यद्यपि यह एक अलग प्रसंग है जिससे हम सहमत नहीं हैं, क्योंकि एक स्त्री गंधारी से 100 सन्तानें पैदा होना असंभव है। पाण्डु की दो पत्नियों से पाँच सन्तानों का होना पाया जाता है, जो कि उचित भी है। धृतराष्ट्र के दो पुत्र दुर्योधन व दु:शासन तीसरा उनका मित्र कर्ण (अंगदेश का राजा) और चौथा इनका मामा गंधार नरेश शकुनि। इस चाण्डाल चौकड़ी की वजह से महाभारत का युद्ध हुआ (ऐसा ऋषि दयानन्द भी मानते थे)। ये चारों के चारों पाण्डवों से घोर ईर्ष्या व द्वेष रखते थे और यह द्वेष अग्नि बाल्यकाल से ही थी। जब भीम को बाल्यकाल में विष दिया गया उसके हाथ पैर बाँध कर नदी में फेंका गया। हर समय वे इस अवसर की ताक में रहते थे कि किस तरह से इन पाँचों पाण्डवों का और उनमें से भी मुख्यत: भीमसेन का सफाया किया जा सके। उस समय तो हम द्रौपदी का पैदा होना भी लगभग-लगभग नहीं मानते हैं। पाँचों भाईयों को लाक्षाग्रह में समाप्त करने के षड्यन्त्र में क्या द्रौपदी सम्मिलित थी? जुए के खेल की योजना किसने बनाई? विदुर, भीष्म पितामह, धृतराष्ट, द्रोण और यहां तक कि माता गंधारी भी समय-समय पर दुर्योधन आदि को अपने भाईयों से वैर ना रखने की शिक्षा प्रदान करते थे लेकिन यह व्यर्थ। इस चाण्डाल चौकड़ी ने तो ठान लिया था कि चाहे कैसे भी हो, इन पाण्डवों को तो समाप्त करना ही है। फिर यह व्यर्थ का दोष उस महारानी पर क्यों लगाया जाता है? आज भी यह आलम है कि जो स्त्री भाईयों में आपस में प्रेम नहीं रहने देती है, लड़ाई-झगड़ा करवाती है, उसे अपमान स्वरूप द्रौपदी की पदवी प्रदान की जाती है और ऐसा ही दोष उस महारानी के प्रति लगाया जाता है। हम उस देवी पर इस तरह के मिथ्या, मनघडंत व बेबुनियाद आरोपों के विरूद्ध हैं। कितनी लज्जा की बात है कि हम नवजात लड़कियों के नाम भी द्रौपदी के नाम से नहीं रखते हैं। इसीलिए महाभारत के युद्ध का एक प्रतिशत भी कारण हम महारानी द्रौपदी को नहीं मानते हैं। एक नितिगत शिक्षा है कि जो स्त्री विपत्ति में सहायक होती है, वह कभी भी युद्ध जैसी विषम घटनाओं का कारण नहीं हुआ करती है।

सरस्वती वन्दना

- कवि कृष्ण 'सौमित्र'' साहित्यालंकार, मो. 8901272846

वीणा वाणी माँ सरस्वती शारदे
लेखनी को ज्ञान का भण्डार दे
तेरे सुत अन्धकार मैं भटके हुए
रोशनी दे माँ हृदय का प्यार दे
तेरे दर पर माँ कहनी कोई नहीं
मेधा शक्ति हमको निर्विकार दे
इस धरा पर सुमति सबको मिले
ज्ञानामृत से भरा संसार दे
इस हृदय में माँ तेरा ही वास हो
कृष्णमय जीवन मेरा नीखार दे।

शैतान ना होता

जीवन में अरमान ना होता
जीना तब आसान ना होता
मैं क्यों उसकी तारीफ करता
गर अच्छा इंसान ना होता
तेरे प्यार पर हक ना होता
मैं इतना परेशान ना होता
कठिन तपस्या गर ना करता
बुद्ध इतना महान ना होता
शान्ति दूत को कोन पूछता
गर जग मैं शैतान ना होता

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
2. चौ नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ, हरि.
3. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
4. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
5. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
6. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
7. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
8. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
9. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
10. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो, बहादुरगढ़
11. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
12. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
13. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
14. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
15. श्री ओमप्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
16. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
17. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
18. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
19. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
20. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
21. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
22. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
23. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
24. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
25. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
26. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
27. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
28. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
29. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
30. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
31. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
32. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
33. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरगंज पटना (बिहार)
34. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
35. कु. विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
36. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
37. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
38. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
39. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
40. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
41. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
42. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
43. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
44. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
45. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
46. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
47. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
48. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
49. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
50. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
51. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
52. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
53. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
54. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
55. यज्ञ समिति झज्जर
56. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
57. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
58. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
59. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
60. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
61. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
62. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
63. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
64. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
65. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
66. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
67. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
68. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी.एल.एफ-2, गुड़गांव
69. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
70. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
71. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़

छल-कपट से बचें

- डॉ. रूपचन्द दीपक

वैदिक संस्कृति धर्म-प्रधान है। यहाँ धर्म का स्वरूप सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है, अर्थात् मानव-धर्म। मनुष्य सामान्य रूप से धर्म को जानता-मानता है। वह आन्तरिक मलिनता अथवा दुर्बलता के कारण इससे दूर हट जाता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के अनुसार-"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।" दूसरे शब्दों में, धर्म को छोड़ छल-कपट को अपना लेता है।

'छ्यति छिनत्ति पराभिप्रायमिति छलम्। कम्पते येन स कपटः माया वा।' दूसरे के अभिप्राय से विरूद्ध अर्थ निकालना 'छल' है। जैसे-कोई कहे कि जो व्यक्ति मुझे प्रभु से मिला देगा, मैं उसे अपनी सारी सम्पत्ति दे दूँगा। इस पर दूसरा व्यक्ति बोले कि प्रभु तो मेरा पड़ोसी है, आज ही मिला दूँगा। यहाँ पहले व्यक्ति का अभिप्राय 'ईश्वर' से मिलना था, किन्तु दूसरे व्यक्ति ने छल से 'प्रभु नामक मनुष्य का अर्थ ले लिया। 'कपट' से तात्पर्य है-दूसरे को भ्रम या धोखे में डालना, उसे ठग लेना। जैसे दुष्ट लोग पीतल से सोना बनाने का कपट करके भोली महिलाओं को ठग लेते हैं।

छल-कपट को तामसी अर्थात् निषिद्ध कर्म बताते हुए गीता स्पष्ट करती है-

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो
नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्त्ता तामस उच्यते॥
(अध्याय-18, श्लोक-28)

अर्थात् अयुक्त (शास्त्रीय कर्म के अयोग्य), प्राकृत (जो शिक्षा, विद्या एवं संस्कार से रहित है), स्तब्ध (वञ्चक, धोखेबाज, ठग), अलसः (आलसी), विषादी (जो शोक में डूबा रहता है) और दीर्घसूत्री (कार्य को टालने वाला), ये सब तामस कर्त्ता हैं। दूसरे शब्दों में, ये आठ दोषयुक्त हैं, धर्म पर चलने वालों को ऐसा नहीं होना चाहिए।

चरक संहिता (2.8.56) के अनुसार-**'छलं नाम परिशठम् अर्थाभासम् अनर्थकं वाग्वस्तुमात्रम् इवः,वाग्जालः'** अर्थात् (1) दूसरे को फँसाने के लिए वाणी का आडम्बर (2) वस्तु जैसी हो उससे भिन्न अर्थ देने वाला व्यवहार (3) अर्थ जैसा प्रतीत होता है वैसा वास्तव में न हो, (4) दूसरे को धोखा देने के लिए मिथ्या शब्द का प्रयोग (5) धूर्त्तता या ठगी करने के प्रयोजन से झूठा व्यवहार करना शठता अथवा छल कहाता है। ऐसे व्यवहार का फल हानिकारक, दुःखद और भयंकर होता है।

चरक संहिता (2.4.8) के अनुसार-**'उपाधिम् अनुबन्धेन परीक्षेत।' भाष्य-'उपेत्य धीयते इति उपाधिः, छद्म इत्यर्थः, अनुबन्धेन इति उत्तरकालं हि भ्रात्रादिवधेन फलेन जायते।'** अर्थात् (1) उपाधिः=धोखादेही, बेईमानी, सच्चाई को दबाना, झूठा सुझाव, प्रवञ्चना और छल (2) जैसे भाई का वध करके उसका फल भोगने पर ही कृत्य पूर्णतया सामने आता है, वैसे ही छल-कपट का स्वरूप 'कृत्य करते समय' नहीं अपितु उसका 'फल भोगते समय' पूर्णतः स्पष्ट होता है।

उदाहरणार्थ- (1) शीघ्र लाभ के लिए जब भवन-निर्माता सीमेन्ट में बालू मिलाता है तब उसे लाभ-ही-लाभ दिखायी देता है, परन्तु भवन गिरने पर जेल जाते समय कर्म-फल व्यवस्था समझ में आ जाती है। (2) दहेज के लिए वधू का उत्पीड़न करते समय लोभी परिवार को धन के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं पड़ता, किन्तु पुलिस केस और जाँच के बाद कठोर दण्ड मिलते समय सम्पूर्ण कर्म-फल सम्बन्ध दिखाई दे जाता है। (3) सम्पत्ति के लिए भाई की हत्या करते समय हत्यारे को अविभाजित सम्पूर्ण सम्पत्ति ही दिखाई

देती है, किन्तु उम्र कैद के साथ अपकीर्ति मिलने पर कर्म-फल का पूरा न्याय स्पष्ट हो जाता है। (4) स्वपुत्र की प्राप्ति के लिए पर-पुत्र की बलि चढ़ाने वाली स्त्री को उस समय अपनी भरी गोद के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता, किन्तु व्यर्थ हत्या का न्यायिक फल मिलते समय पाप-पुण्य का खुला दर्शन हो जाता है।

छल-कपट का विचार आते ही उसके कर्म का परिणाम बुद्धि में दिखाई दे जाए, तो मनुष्य चिन्तन करके अपराध और पाप से बच सकता है। इस उद्देश्य से वैदिक संस्कृति में पग-पग पर उपदेश किए गए हैं। आचार्य चाणक्य के सूत्र हैं- **(1) सुखस्य मूलं धर्मः। (2) धर्मस्य मूलम् अर्थः।'** सुख का कारण धर्म है। धर्म का दृष्ट-मूल अर्थ है।' वस्तुतः अर्थ की प्राप्ति धर्म-न्याय सत्य से भी सम्भव है और अधर्म-अन्याय-असत्य से भी। जो अर्थ (धन-सम्पति) 'धर्म (सत्य एवं न्याय) से प्राप्त होता है, वह (अर्थात् वही) व्यापक दृष्टि से सुख का कारण बनता है, दूसरा नहीं।

कठोपनिषद् का वचन है- **'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः (1.27)।'** अर्थात् मनुष्य धन से तृप्त होने वाला नहीं है। वस्तुतः धन की लालसा मनुष्य से लम्बे समय तक अनुचित कर्म कराती रहती है। कब तक? जब तक कि वह दुःख में नहीं फँसता और सम्बन्धियों को भी नहीं फँसा देता। अतः आरम्भ में समझ लेना ही श्रेयस्कार है।

यजुर्वेद का मन्त्र है-

अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्
विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते
नमऽउक्तिं विधेम॥

(अध्याय-40, मन्त्र-16)

मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि ईश्वर हम सब मनुष्यों के मनों से कुटिलतायुक्त पापरूप कर्म को दूर करें और हमें सुपथ अर्थात् अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के द्वारा बताए गए मार्ग से धन, विज्ञान, सुख और ऐश्वर्य की प्राप्ति कराए। अर्थात् हम छल, कपट, हिंसा आदि बुरे भावों को दूर करके धर्म, सत्य, न्याय आदि अच्छे भावों से युक्त होकर ही धन-समृद्धि प्राप्त करें।

मनुस्मृति सचेत करती है-

अधर्मेण एधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलमस्तु विनश्यति॥

(अध्याय-4, श्लोक-174)

(अधर्मात्मा मनुष्य धर्म की मर्यादा को छोड़ विश्वासघात एवं कपट से दूसरे के पदार्थों को लेकर पहले तो बढ़ता है, जैसे तालाब का बन्ध तोड़कर जल चारों ओर फैल जाता है, वह ऐश्वर्य से अन्न, वस्त्र, आभूषण, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त करता है, अन्याय से शत्रुओं को भी जीतता है, परन्तु बाद में शीघ्रता से नष्ट हो जाता है, जैसे जड़ कटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है।)

मानव-धर्म के सभी उत्तम कर्मों का समर्थन करने वाले और सभी दुष्ट कर्मों का विरोध करने वाले महर्षि दयानन्द समझाते हैं-''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।'' हमें सार्वजनिक उन्नति के विरूद्ध जाकर व्यक्तिगत उन्नति नहीं प्राप्त करनी चाहिए। लोक-हानि होने पर स्व. लाभ भी अन्ततोगत्वा हानि में परिणत हो जाता है। अतः सब मनुष्य छल-कपट से सदा बचें और सार्वभौम वैदिक ध र्म का पालन करते हुए ही स्वकीय एवम् राष्ट्रीय समृद्धि के उपाय करें।

- बी-72, श्रृंगार नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश-226005, मो.09839181690

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं-

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-A0211948

प्रत्येक गृहस्थ के लिए अनिवार्य

-आचार्य भगवान देव चैतन्य

वेदादि सत्य ग्रंथों का स्वाध्याय छूट जाने के कारण आज हमारे समाज में प्राचीन ऋषि मुनियों की परम्पराएँ समाप्त प्राय: हो गई हैं, इसलिए धर्म ने आज पाखंड और आडम्बर का रूप धारण कर लिया है। यह कहने में किसी प्रकार की अतिश्योक्ति नहीं होगी कि मत मजहब और सम्प्रदायवाद की आंधी ने हमसे सब कुछ छीन लिया है। यह हमारा सौभाग्य ही है कि उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसा महर्षि इस संसार में आया जिसने वैदिक धर्म की पुन: स्थापना की दिशा में अत्यंत महत्त्वपूर्ण और सार्थक कार्य किया। महर्षि दयानन्द से पूर्व (और आज भी) कुछ स्वार्थी लोगों ने धर्म को मात्र बाह्य आडंबर और दिखावे तक ही सीमित कर दिया था। आज भी स्थिति यह है कि तुम किसी किताब पर ईमान लाओ, किसी पैगंबर पर ईमान लाओ, इस तरह की टोपी धारण करो, इस तरह के पूजास्थल पर जाओ, ऐसे केश रखो, गले में ऐसा चिह्न धारण करो, तुम धार्मिक हो जाओगे। इन बाहरी प्रक्रियाओं में उलझकर व्यक्ति अनेक प्रकार के मत मजहबों में भटक कर अपना जीवन बर्बाद कर रहा है तथा धर्म के वास्तविक स्वरूप से बहुत दूर चला गया है। महर्षि दयानन्द जी ऐसे विलक्षण महापुरुष थे, कि उन्होंने धर्म को व्यवहार के साथ जोड़ा। मनु महाराज के स्वर में स्वर मिलाते हुए उन्होंने कहा कि **'न लिंग धर्म कारणम्'** अर्थात् ये बाहर के चिह्न धर्म का स्वरूप नहीं हैं। धर्म तो आचरण की वस्तु है, केवल दिखावे की नहीं। लोगों ने बाहर से धार्मिक दिखना तो आरम्भ कर दिया पर वे धार्मिक बनना भूल गए। धर्म व्यक्ति के लोक परलोक को संवारने वाला है। वास्तविक धर्म के व्यवहार के अभाव में आज प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक परिवार दु:खी है। गृहस्थ आश्रम को सुखी बनाने के लिए महर्षि जी ने प्रत्येक गृहस्थ को पांच महायज्ञ करने का निर्देश दिया है। यों तो व्यावहारिक धर्म की अनेक मनीषियों ने अनेक सुन्दर परिभाषाएँ की हैं। किन्तु एक प्रकार से देखें तो पांच महायज्ञ धर्म का बहुत ही सुन्दर, सार्थक तथा व्यावहारिक स्वरूप हैं। इसीलिए प्रत्येक गृहस्थ के लिए इनका करना महर्षि जी ने अनिवार्य किया है। मनु महाराज जी को उद्धृत करते हुए वे सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं-

ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा।
नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्॥

भाव यह है कि प्रत्येक गृहस्थ को ब्रह्म-यज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ करना अनिवार्य है। अति संक्षेप में इनका विवेचन आगे किया जाता है।

1. **ब्रह्म-यज्ञ**-वेदादि शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, संन्ध्योपासना और योगाभ्यास करना, यह ब्रह्म यज्ञ है। संसार में आकर मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य परमात्मा की उपासना करना ही है। उपासना के लिए योगाभ्यास और सम्यक् ध्यान करना अनिवार्य है। महर्षि जी का तो कथन है कि प्रत्येक गृहस्थी को भी योगी की तरह प्रतिदिन ध्यानस्थ होना अनिवार्य है। परमात्मा की उपासना से मनुय कृतघ्नता के पाप से तो बचता ही है इसके साथ-साथ उसे शारीरिक, मानसिक, आत्मिक तथा सामाजिक बल भी प्राप्त होता है। उपासना से वह जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करता है और परमात्मा के आनन्द में निमग्न होता है। आत्मवित् बनने के लिए सच्चा ज्ञान, सच्चा कर्म और सच्ची उपासना अनिवार्य है इसलिए वेदादि सत्य शास्त्रों का स्वाध्याय करना भी इसी यज्ञ के अन्तर्गत रखा गया है। आज उपासना के नाम पर भी अनेक प्रकार के आडम्बर और पाखंड आरंभ हो गए हैं पर उपासना की सही विधि वही है जो महर्षि पतंजलि जी ने अपने योगदर्शन ग्रंथ में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि के रूप में विवेचित की है। इसके क्रियान्वयन से ही व्यक्ति आत्मवेत्ता बनकर अपने जीवन को सार्थक बना सकता है।

2. **देवयज्ञ**-अग्निहोत्र को देवयज्ञ कहते हैं। यह

हमारे ऋषि मुनियों द्वारा प्रदत्त एक ऐसी अद्‌भुत प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति का यह लोक और परलोक दोनों संवर जाते हैं। धर्म का यह उत्कृष्टतम रूप है। इसीलिए शतपथ ब्राह्मण में लिखा है- **'यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म'** आज संसार में इस यज्ञ के प्रति भी अनेक प्रकार की भ्रांतियाँ फैली हुई हैं। कुछ अज्ञानी लोगों का कथन है कि इससे पर्यावरण बिगड़ जाता है, कुछ का कहना है कि आज इस महंगाई के युग में इतने कीमती घृत व मेवों आदि को स्वाहा स्वाहा करके नष्ट कर देना कोई बुद्धिमत्ता नहीं है। कुछ का कहना है कि अग्नि में जलने से ऑक्सीजन की हानि होती है, कुछ का कहना है कि इससे कार्बनडाई ऑक्साइड पैदा होती है। वास्तव में अग्निहोत्र के बारे में इस प्रकार की बातें करना अज्ञानता की ही पराकाष्ठा है। यदि हम मनन और चिन्तन करें तो स्वत: ही इसकी वैज्ञानिक प्रक्रिया का हमें पता चल सकता है। पहली बात तो यह समझने की है कि कोई भी पदार्थ कभी नष्ट नहीं होता बल्कि वह केवल अपना स्वरूप बदलता है। अर्थात् अग्नि में डाली हुई घी और सामग्री नष्ट नहीं हुई बल्कि उसने अपना स्वरूप बदल लिया ये पदार्थ सूक्ष्म होकर पर्यावरण में फैल गए। पदार्थ में एक गुण यह भी है कि यह अग्नि का स्पर्श पाकर और भी अधिक शक्तिशाली हो जाता है। इस प्रकार हवन में जो भी पदार्थ डाले जाते हैं वे न केवल सूक्ष्म होकर वातावरण में फैल जाते हैं बल्कि अग्नि का स्पर्श पाकर वे और अधिक गुणकारी भी हो जाते हैं। महर्षि दयानन्द जी ने यह सिद्ध करने के लिए मिर्च का उदाहरण देते हुए कहा है कि यदि एक मिर्च हम अग्नि में डाल दें तो लोगों का उस स्थान पर बैठना कठिन हो जाएगा क्योंकि जिस एक मिर्च का तीखापन एक व्यक्ति को ही अनुभव हो सकता था वही एक मिर्च अग्नि में जलकर और अधिक सूक्ष्म और गुणकारी होकर वातावरण में फैल गई। ऋषियों की इस वैज्ञानिक अद्‌भुत प्रक्रिया को नकारना केवल अल्पज्ञता ही है। इससे न तो केवल कार्बनडाई ऑक्साइड ही पैदा होती है और न ही ऑक्सीजन की कमी होती है। इसके विपरीत इससे किसी न किसी रूप में ऑक्सीजन भी बढ़ती है और यदि सही ढंग से हवन की प्रक्रिया की जाए तो इससे फारमैल्डीहाइड गैस पैदा होती है जो कीटाणु नाशक तथा वायु को शुद्ध करने वाली एवम् प्राणिमात्र के लिए अत्यंत उपयोगी है। आज पर्यावरण के दूषित होने की समस्या भयंकर रूप धारण करती जा रही है। यहाँ तक कि ओजोन की परत में भी छिद्र हो गया है। वैज्ञानिकों ने परीक्षण करके इस बात को सिद्ध किया है कि पर्यावरण को केवल हवन द्वारा ही शुद्ध किया जा सकता है। महर्षि ने इस देवयज्ञ की प्रक्रिया के बारे में 'भेदन शक्ति' शब्द का प्रयोग किया है। इस शक्ति के कारण न केवल पूरा पर्यावरण शुद्ध होता है बल्कि ओजोन में हो रहा छिद्र भी समाप्त हो सकता है। देवयज्ञ से जल वायु और आकाश आदि भूत स्वच्छ, शुद्ध और पवित्र होते हैं। एक सीधी सी बात है कि जब हम किसी गंदे पदार्थ को अग्नि में डालते हैं तो सारे वातावरण में दुर्गन्ध फैल जाती है। तो क्या इसके विपरीत अच्छे पदार्थों को जलाने से सुगन्धि नहीं फैलाई जा सकती। अग्निहोत्र की गुणवत्ता को आज सारा संसार मानने लगा है तथा अमेरीका में अग्निहोत्र विश्व विद्यालय की स्थापना हो गई है। प्रत्येक व्यक्ति को अग्निहोत्र करना चाहिए इसका एक व्यावहारिक कारण बताते हुए महर्षि कहते हैं कि हम अपने शरीर आदि से वातावरण को दूषित करते हैं। इसलिए हम जितनी दुर्गन्ध फैलाते हैं कम से कम उतनी सुगंध फैलाना हमारा नैतिक दायित्त्व बन जाता है। इस प्रकार देव यज्ञ एक अति महत्त्वपूर्ण कार्य है तथा प्रत्येक गृहस्थ को इसे करने का उन्होंने विधान किया है। भीष्म पितामह युधिष्ठिर को उपदेश करते हैं कि अग्निहोत्र का कभी त्याग नहीं करना चाहिए, इसका त्याग करने वाले को ब्रहत्या का पाप लगता है। आगे वे कहते हैं कि इससे बढ़कर कोई दान नहीं है, धर्म नहीं है तथा इससे बढ़कर कोई निधि नहीं है.....

3.पितृयज्ञ-बहुत से लोगों को यह भ्रम है कि आर्य समाज श्राद्ध को नहीं मानता है। पर वास्तविकता यह है कि केवल आर्यसमाज ही सही अर्थों में श्राद्ध करता है शेष लोग तो मात्र दिखावा व आडम्बर करते

हैं। **महर्षि दयानन्द सरस्वती जी** ने प्रत्येक गृहस्थ को पितृयज्ञ करने का निर्देश दिया है और साथ ही इसका विशद विवेचन करते हुए कहा कि जो विद्वान् हैं, ऋषि जो पढ़ने पढ़ाने वाले हैं, तथा माता की सेवा करना ही पितृ महायज्ञ है। मरने के बाद कौन जीवात्मा की कौन सी गति होती है यह तो अल्पज्ञ होने के कारण हम निश्चित नहीं कर सकते हैं और न ही मरे पीछे किसी को किसी का दिया हुआ अन्नादि ही पहुंच सकता है।, इसलिए उन्होंने जीवित माता-पिता की सेवा को धर्म का कृत्य माना है। आज लोग श्राद्ध एवं तर्पण आदि का दिखावा तो बहुत करते हैं, पर माता-पिता की स्थिति समाज में अच्छी नहीं है। अपने आप को श्रीरामजी का भक्त कहने वाले लोग भी आज माँ-बाप क़ी सेवा करना एक भार समझते हैं। कहाँ तो श्रीराम जी का आदर्श कि प्रातः काल उठकर माता-पिता के चरण स्पर्श करते हैं और पिता की आज्ञा पालन करने के लिए राज्य को ठुकराकर 14 वर्ष का वनवास स्वीकार करते हैं और कहाँ आज की कुछेक संतानें जो अपने जन्म देने वालों को भी बोझ समझती हैं। गत वर्ष प्रयाग में कुम्भ का मेला हुआ तो यह चौंकाने वाला तथ्य सामने आया कि उस मेले में आठ हजार ऐसी भी संतानें गई थीं, जो वहाँ जाकर अपने बूढ़े माँ-बाप को इसलिए भीड़ में भटकने के लिए छोड़ आई ताकि उनसे छुटकारा मिल सके। लेकिन अधिकतर ऐसी संताने भी मरने के बाद अपने माँ-बाप की हड्डियों को गंगा में पहुंचाना तथा पंडितों को बुलाकर भोजन आदि कराना पुण्य का काम समझती हैं। इससे बड़ा आडम्बर भला और क्या हो सकता है?

महर्षि जी ने पितृयज्ञ के दो भेद करते हुए कहा कि एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्रद्धा से कर्म किया जावे उसका नाम श्राद्ध है। अर्थात् सच्चे हृदय से श्रद्धा और समर्पण के साथ माता-पिता की सेवा करनी चाहिए। तर्पण के बारे में उनका कथन है कि जिस-जिस कर्म से तृप्त होकर विद्यमान् माता-पितादि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जाएं उसका नाम तर्पण है। माता-पिता हमारे लिए जीवन में बहुत कष्ट उठाते हैं, इसलिए उनकी तन मन और धन से सेवा करनी चाहिए। माता-पिता वास्तव में कितने महान हैं, उसका उल्लेख हमें महाभारत में मिलता है। यक्ष युधिष्ठिर जी से पूछते हैं कि पृथ्वी से भारी कौन है? तो उत्तर दिया जाता है कि माँ पृथ्वी से भारी होती है। जब पूछा जाता है कि आकाश से भी ऊँचा कौन है तो धर्मराज उत्तर देते हैं कि आकाश से भी ऊँचा पिता है। इसलिए जीवित माँ-बाप की सेवा करना ही पितृ यज्ञ का उद्देश्य है।

4. अतिथि यज्ञ- इसके बाद चौथा यज्ञ है कि गृहस्थ अतिथियों की सेवा करे पर आज इस यज्ञ की भी जो दुर्गति हो रही है, वह देखने योग्य है। आज हमारे समाज में ऐसे तथाकथित पाखंडी, तान्त्रिक साधु तथा गुरु पैदा हो गए हैं जो अज्ञानी लोगों को खूब मूर्ख बना रहे हैं तथा आंख के अंधे और गांठ के पूरे लोगों को खूब लूट रहे हैं। महर्षि दयानन्द जी ने मनु को उद्धृत करते हुए लिखा है (4-30) कि ऐसे पाखंडी, वेदविरूद्ध आचरण व कर्म करने वाले, धन लोलुप, दुराग्रही, कुतर्की, बकवृत्ति अर्थात् लोगों को ठगने वालों का तो वाणी मात्र से भी सत्कार नहीं करना चाहिए। वे आगे एक अत्यधिक व्यावहारिक चेतावनी देते हैं-'इनका सत्कार करने से ये वृद्धि को पाकर संसार को अधर्मयुक्त करते हैं। आप तो अवनति के काम करते ही हैं परन्तु साथ में सेवक को भी अविद्या रूपी महासागर में डुबा देते हैं।'

आज इन वेदज्ञानशून्य पाखण्डियों के कारण देश और समाज का जितना अहित हो रहा है वह सब हमारे प्रत्यक्ष ही है, इसलिए ऐसे लोगों का मान सम्मान नहीं करना चाहिए बल्कि वास्तव में अतिथि कौन हैं जिनकी हमें तन मन और धन से सेवा करनी चाहिए इसका उल्लेख महर्षि जी अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में इस प्रकार करते हैं-'अतिथि उसको कहते हैं कि जिसकी कोई तिथि निश्चित न हो। अर्थात् अकस्मात् धार्मिक, सत्योपदेशक, सबके उपकारार्थ सर्वत्र घूमने वाला पूर्ण विद्वान, परमयोगी संन्यासी गृहस्थ के यहाँ आवे तो उसको प्रथम पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय तीन प्रकार का जल देकर पश्चात् आसन

पर सत्कारपूर्वक बिठलाकर, खान-पान आदि उत्तमोत्तम पदार्थों से सेवा शुश्रूषा करके उनको प्रसन्न करे। पश्चात् सत्संग करके उनसे ज्ञान विज्ञान आदि, जिनसे धर्म अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होवे, ऐसे ऐसे उपदेशों का श्रवण करे और अपना चालचलन भी उनके सदुपदेशों के अनुसार रखे।

5. **बलिवैश्वदेवयज्ञ**- आर्यावर्त्त जैसी उत्कृष्ट संस्कृति संसार में अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलती है। **जीओ और जीने दो और सर्वे भवन्तु सुखिनः** की भावना हमारी इस संस्कृति का आधार है। बलिवैश्वदेवयज्ञ की यही भावना है कि प्राणिमात्र के प्रति हमारे हृदय में प्रेम और दया की भावना होनी चाहिए। संसार में जितने भी जीव हैं उन सबके भीतर हमारी जैसी ही आत्मा है अतः हम उन्हें अपने स्वार्थों के लिए किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाएं बल्कि उनके प्रति सदा दया और प्रेम की भावना बनाए रखें। **आत्मवत् सर्वभूतेषु** की भावना के अनुसार हमें किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार का कोई दु:ख नहीं देना चाहिए। आज लोग अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए अनेक पशुओं का निर्ममता के साथ वध कर देते हैं। यह कितने दु:ख और आश्चर्य की बात है। वेद कहता है कि तुम सभी प्राणी एक दूसरे से ऐसे प्रेम करो जैसे गाय अपने नवजात बछड़े से करती है। प्राणी मात्र के लिए दया की भावना रखकर व्यवहार करना ही वास्तव में धर्म का उत्कृष्टतम रूप है। इसलिए महाभारत में महर्षि व्यास जी कहते हैं कि **आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्** अर्थात् जैसा व्यवहार तुम दूसरों से अपने प्रति चाहते हो दूसरों से वैसा ही व्यवहार करो तथा जैसा व्यवहार दूसरों से अपने प्रति नहीं चाहते हैं हम भी किसी से वैसा व्यवहार न करें। इसी भावना को तुलसी जी ने इस प्रकार व्यक्त किया है-**परहित सरस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहिं अघमाई।** इसी भावना को चरितार्थ करने की दिशा में गृहस्थ के लिए प्रतिदिन कुछ आहुतियों का विधान भी किया गया है।

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

नीम एक स्वास्थवर्द्धक औषधि है

- डॉ. सूरज

मनुष्य जब से इस धरती पर आया है, तब से आज तक किसी न किसी तरह का अनुसंधान करता ही रहा है। चाहे वह अनुसंधान विज्ञान में हो या अध्यात्म में हो या आयुर्वेद में हो या अन्य क्षेत्र में हो। मनुष्य के आयुर्वेद का क्षेत्र बहुत पुराना और विकसित रहा है। यही कारण है कि आज मानव के पास इसका बहुत बड़ा बहुमूल्य भंडार है। तभी तो इन जड़ी-बूटियों से भारत विश्व में आयुर्वेद के क्षेत्र में एकाधिकार प्राप्त किए बैठा है। जैसे-नीम, पान, केसर, लौंग, इलायची तथा असंख्य फल-फूल एवं पत्तियाँ आदि। अन्य जड़ी-बूटियों को छोड़कर सिर्फ नीम के महत्त्व को परखा जाए। नीम का पेड़ प्राय: हर घर के करीब मिल जाता है। यही नहीं इसका पेड़ श्मशान घाट में भी लगा होता है। जहाँ शव से उठने वाला दुर्गन्ध वातावरण को पूर्ण रूप से शुद्ध कर देती है। अर्थात् आज यह मानव जाति के लिए हर रूप में उपयोगी सिद्ध हो चुका है। जिसका कुछ उदाहरण आप स्वयं देख सकते हैं।

नीम की छोटी-छोटी टहनियों को तोड़कर लोग उससे सुबह की बेला में अपना हाथ-मुँह धोते हैं। जिस कारण मुँह का जितना रोग-विकार तथा कीड़ा-मकोड़ा होता है, वह सब इसके तेज विषैले रस से खत्म हो जाता है। यही नहीं दुनिया में आज कैंसर एक असाध्य रोग साबित हो चुका है। जिस कारण प्रतिवर्ष विश्व में हजारों लाखों आदमी मर रहे हैं। फिर भी आज तक इस रोग के लिए कोई दवाई नहीं बन पाई है। इस हालत में नीम के पेड़ की छाल को पीसकर उसे थोड़ा-थोड़ा लेकर एक गिलास शर्बत के रूप में या नीम का तेल सवा चम्मच, सुबह-शाम, एक से दो महीना नियमित सेवन करने से इसके सारे कीड़े मर जाते हैं और रोगी तुरंत निरोग हो जाता है।

इससे बने मलहम, घाव को सुखाने एवं उसे भरने में, काफी मदद करता है। जबकि घाव को भरने के लिए कई कीमती एवम् दुर्लभ दवाई का उपयोग लोग करते हैं। तब भी घाव पर इतना जल्दी असर नहीं पैदा होता है। आज अन्न की कीमत कितनी बढ़ गई है। यह किसी से छुपी हुई नहीं है। इसलिए इसकी सुरक्षा करना अत्यन्त जरूरी हो गया है। इस कारण चावल, गेहूँ, दाल आदि अन्न को, सुरक्षित करके रखने के लिए इसमें नीम का पत्ता रखते हैं। जिससे धुन अथवा कीड़ा-मकोड़ा न लगता है और न अन्य चीज इसे खराब करती है। इसलिए यह पूर्ण रूप से सुरक्षित रहता है। आप इस महंगाई के जमाने में अपने अन्न को चूहे तथा कीड़े-मकोड़ों से बचाकर नहीं रखते हैं तो आपके परिवार के महीने भर का बजट गड़बड़ा जाता है। क्योंकि असावधानी से अन्न रखा होने के कारण कीड़े-मकोड़े और चूहे आदि जीव-जन्तु उसे कुतर देंगे। इसलिए इनसे बचाने के लिए नितान्त आवश्यक है कि इसकी सुरक्षा करना।

अन्न की तरह, आज कपड़ा भी महंगा हो गया है। आज के युग में आदमी के लिए रोटी, कपड़ा और मकान, अत्यन्त आवश्यक चीजे बन गई है। इस कारण आदमी के पास जो भी कपड़ा है उसे सुरक्षा करना बहुत जरूरी है। इस हालत में कपड़ों में नीम का पत्ता सुखाकर रखा जाता है। जिससे वह कपड़ा कई साल तक बिल्कुल सुरक्षित बना रहता है। जबकि आजकल लोग 'फिनाइल' की गोली का उपयोग करते हैं। इससे कपड़ा सुरक्षित तो अवश्य होता है लेकिन कपड़ों में एक तीखी गंध आ जाती है। पर नीम के पत्तों में कोई गंध नहीं होती। इन सबों के अलावा जब भी आपके शरीर में दर्द होता है या आपकी त्वचा रूखी-रूखी हो जाती है, उस हालत में आप गुनगुने पानी में इसके पत्ते को रख छोड़िए और थोड़ी देर के बाद इससे स्नान कर लीजिए। फिर देखिए आपका मन-मस्तिष्क कितना खुश होकर खिल उठता है। लेखक के एक पड़ोसी महेश बाबू हैं। इनकी एक बच्ची एक बार बीमार पड़ गई। तब महेश बाबू इधर-उधर जहाँ तक हो सकता था, वह किया। उनकी बच्ची की तबियत में कोई सुधार नहीं हुआ।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

आपकी सेहत का जाम है बादाम

- यादशत कमजोर है तो बादाम अचूक इलाज है। बादाम की दस गिरी रात को पानी में भिगोकर सुबह छिलका उतारकर बारीक करके 20 ग्राम मक्खन, 10 ग्राम मिश्री मिलाकर एक महीने तक खाएं। दिमाग की कमजोरी दूर हो जाएगी और याददाशत अच्छी हो जाएगी।
- सिर दर्द होता है तो माथे पर बादाम का तेल लगाएं। अगर बादाम के तेल की मालिश सिर में करें तो सिरदर्द जल्द ही ठीक हो जाएगा।
- बच्चे को अक्सर कुछ-कुछ होता रहता है तो उसे हष्ट-पुष्ट व निरोगी बनाने के लिए रोजाना एक से दो बादाम पत्थर पर घिसकर चटाएं। इससे बच्चों का दिमाग भी तेज होगा।
- त्वचा की कांति चली गई है तो उसे पाने के लिए बादाम का सेवन कारगर साबित होगा। इसमें विटामिन ई काफी होता है। बादाम को तेल के रूप में इस्तेमाल करें। इसे शरीर में लगा भी सकते हैं और खाने में भी इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। यह रक्त संचार को भी तेज करेगा और त्वचा निरोगी व कांतिमय बनेगी।
- हृदय रोगियों के लिए तो बादाम काफी फायदेमंद साबित होता है। इसमें ओमेगा 3 फैटी एसिड अधिक होता है और यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करता है वह अच्छे कोलेस्ट्राल को बढ़ाता है। इस वजह से हृदय की नलियों में रूकावट कम होती है और इसके प्रयोग से दिल का दौरा होने की आशंका कम हो जाती है।
- कैंसर का खतरा भी कम करता है बादाम। इसमें सैचुरेटेड फैट बहुत कम होने के साथ फाइबर अधिक मात्रा में होता है। इसके अलावा इसमें कुछ ऐसे विटामिन और खनिज होते हैं जो कैंसर का खतरा कम करते हैं।
- बाल कमजोर हैं तो बादाम का तेल कारगर साबित होगा। स्वस्थ बालों के लिए विटामिन ए,बी और सी के साथ कैल्शियम की विशेष जरूरत होती है। रोज तीन-चार भीगे हुए बादाम खाने से न सिर्फ बाल मजबूत होते हैं, नाखून व त्वचा भी चमकदार हो जाती है।
- बादाम में पोटैशियम अधिक मात्रा में होती है और सोडियम कम मात्रा में। इस कारण इसके सेवन से रक्त का संचार ठीक रहता है और पूरे शरीर में अच्छी तरह ऑक्सीजन पहुंचता है।
- कैल्शियम का भी अच्छा स्त्रोत है बादाम। इस कारण हड्डियों और दांतों को तो मजबूत करता ही है, ऑस्टियोपोरोसिस के खतरे को भी कम करता है।
- अगर आप काफी मोटे हैं, हाई बीपी की समस्या है और ब्लड सुगर भी काफी है तो आपको दिल की बीमारी का खतरा अधिक होगा। लेकिन बादाम का नियमित सेवन आपको इन खतरों से बचा सकता है।
- बादाम के तेल में विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होता है, जो बच्चों की हड्डियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए इस तेल से बच्चों की मालिश करें।

-सभार हिन्दुस्तान टाईम्ज़

बच्चों को संस्कारवान बनाने में सहायक कुछ प्राथमिक बातें'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आज का युग आधुनिक युग कहलाता है जहां क्या वृद्ध, क्या युवा और क्या बच्चे, सभी पाश्चात्य संस्कारों में दीक्षित हो रहे हैं। दूर के ढोल सुहावने की भांति बिना जाने समझे पाश्चात्य जीवन शैली उन्हें अच्छी लगती है और वेश-भूषा और विचार ही नहीं भाषा और भोजन आदि भी उनका बिगड़ रहा है वा बिगड़ गया है। यह लोग भारतीय वैदिक संस्कृति से दूर होकर अपने जीवन की सुख शान्ति भंग कर लेते हैं और बाद में रोगी व तनाव से ग्रस्त होकर असमय मृत्यु का ग्रास बनते हैं। आज की युवा पीढ़ी आध्यात्मिक मूल्यों से सर्वथा शून्य देखी जाती है। किसी को न तो वेद और उसकी शिक्षाओं सहित उनके महत्व का ज्ञान है और न ही ईश्वर व आत्मा के स्वरूप का ज्ञान है। आज की युवा पीढ़ी को जीवन के लक्ष्य व उद्देश्य का भी पता नहीं है। उन्हें यह भी पता नहीं कि उनका यह जन्म उनके पूर्वजन्म का पुनर्जन्म है और इस जन्म में जब भी उनकी मृत्यु होगी उनके ज्ञान, संस्कार और कर्मानुसार उनका पुनः पुनर्जन्म अर्थात् नया जन्म होगा। जन्म-मरण और पुनर्जन्म की यह यात्रा हमेशा चलती रहेगी। इसे विश्राम मिलेगा तो प्रलय अवस्था में या फिर मोक्ष की अवस्था में। यही कारण है कि महाभारतकाल से पूर्व के समय में हमारे देश में वेदों के आधार पर मनुष्यों की जीवन शैली हुआ करती थी और उस समय सभी लोग वैदिक रीति से गुरुकुलों में पढ़ते थे और उनको वेद में वर्णित ईश्वर व आत्मा के सत्य स्वरूप सहित अपने कर्तव्य-कर्मों का ज्ञान होता था और उसके अनुसार ही उनका आचरण भी हुआ करता था।

सन्तान वैदिक संस्कारों से युक्त हो इसके लिए ऋषि दयानन्द ने वेद के आधार पर मनुष्य के गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों का विधान किया है। यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके घर में संस्कारित सन्तान आये तो उन्हें सन्तान के जन्म से बहुत पहले अपने आचार व विचारों पर ध्यान देना होगा। उन्हें वैदिक धर्म व संस्कृति का अध्ययन कर उसकी मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर आचरण करना होगा। यदि वह ऐसा करते हैं अर्थात् वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार अपना जीवन बनाते हैं तो अनुमान किया जा सकता है कि उनके घर में संस्कारवान् आत्मा पुत्र व पुत्री के रूप में जन्म ले सकती है। इसमें एक मुख्य बात यह होती है कि अच्छी सन्तान की प्राप्ति के लिए माता पिता को संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिये। इसी को ब्रह्मचर्य कहा जाता है। ब्रह्मचर्य में संयम के साथ जीवन व्यतीत करते हुए वेदों का अध्ययन करना व ईश्वरोपासना आदि कर्मों का अनिवार्य रूप से आचरण करना आवश्यक होता है। ऋषि दयानन्द ने गर्भाधान संस्कार का विधान संस्कार विधि पुस्तक में किया है जो इस विषय के प्राचीन आचार्यों के विधानों के अनुकूल है। इसे विस्तार से जानने के लिए संस्कार विधि में इस संस्कार का अध्ययन करना चाहिये। संस्कार विधि पर आर्यसमाज के उच्च कोटि के कीर्तिशेष विद्वान् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने संस्कार भास्कर टीका लिखी है। वहां इस संस्कार के समर्थन में अनेक जानकारियां एवं प्रमाण दिये गये है। उसका अध्ययन करने से लाभ होता है। सुसन्तान के निर्माण के लिए माता-पिता को अपनी सन्तान के पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार भी करना चाहिये। श्रेष्ठ बालक व बालिका के निर्माण के लिए माता-पिता को आधुनिक शिक्षा सहित उन्हें संस्कृत भाषा, व्याकरण सहित वेदादि ग्रन्थों का अध्ययन भी कराना चाहिये। पाठ्य ग्रन्थों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय एवं व्यवहारभानु आदि ग्रन्थ भी सम्मिलित हैं।

आर्यसमाज के अनेक विद्वानों महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी ब्रह्ममुनि, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी देवव्रत सरस्वती आदि ने लघु ग्रन्थों की रचनायें की हैं। उनकी शिक्षा व पाठ भी बच्चों को कराया जाना चाहिये। बच्चों को योगासनों सहित ध्यान का अभ्यास भी कराया जाये तो यह उनके जीवन में उपयोगी होता है। बच्चों को भोजन में देशी गाय का

दुग्ध व यथोचित मात्रा में फलों का सेवन भी कराया जाना चाहिये। माता-पिता द्वारा सदाचार के नियमों की शिक्षा भी बच्चों को दी जानी चाहिये। बच्चे जीवन में चोरी, व्यभिचार, असत्य कथन आदि न करें, इसके दुष्परिणामों से भी बच्चों की बौद्धिक क्षमता के अनुसार ज्ञान दिया जाना चाहिये। बच्चों को बचपन से ही माता-पिता द्वारा अपने साथ बैठाकर सन्ध्या व यज्ञादि कराये जाने चाहियें। इससे बच्चे इन्हें सीख जाते हैं और उन पर अच्छे संस्कार पड़ते हैं। बच्चों को स्वाध्याय की आदत भी डालनी चाहिये। माता-पिता उन्हें बच्चों से संबंधित किसी वैदिक सदाचार की पुस्तक का वाचन करने के लिए कह सकते हैं और उसकी बातों को उन्हें समझा भी सकते हैं। यह बातें देखने में तो मामूली हैं परन्तु इनका प्रभाव सारे जीवन भर रहता है। बच्चों को व्यायाम व योगासन भी सीखाने आवश्यक है। यह अभ्यास भी उनके बलशाली व स्वस्थ जीवन का आधार बनता है। बच्चों को अच्छे विचार ही मिले, बुरे विचार न मिलें, इसके लिए बच्चों को बुरे स्वभाव वाले अध्यापकों व पारिवारिक जनों की संगति से दूर रखना चाहिये। उन्हें पढ़ाने वाले अध्यापक वा अध्यापिकायें सज्जन व चरित्रवान् होने चाहियें। उनका व्यवहार अपने शिष्यों पर माता-पिता व आदर्श आचार्य के अनुरूप होना चाहिये। बच्चे जब कुछ बड़े हों और उनमें समझने की क्षमता हो तो उन्हें मूर्तिपूजा के दोषों के बारे में भी संक्षिप्त रूप से बता देना चाहिये। बच्चे बड़े होकर फलित ज्योतिष व जाति-पांति आदि अनुचित विचारों व व्यवहारों में न फंसे, इसका भी आवश्यकतानुसार ज्ञान बच्चों को कराया जाना चाहिये। माता-पिता को अपने सन्तानों को टीवी, मोबाइल आदि की लत से भी बचाना चाहिये। वह कम्प्यूटर व इण्टरनैट आदि का दुरुपयोग न करें व कुसंगति में न फंसे, इसका भी उन्हें विशेष ध्यान रखना है। बच्चों को यह बताया जाना चाहिये कि उन्हें अपने माता-पिता सहित सभी आचार्यों एवं बड़ों के प्रति आदर भाव रखना है व उन्हें सम्मान देना है।

यदि इतना भी हम करते हैं तो हमें लगता है कि यह बच्चे की उन्नति व सर्वांगीण विकास में सहायक हो सकता है। बचपन में ही बच्चों को बाल सत्यार्थप्रकाश व बाल ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित ऋषि दयानन्द कृत व्यवहारभानु व संस्कृत वाक्य प्रबोध का अध्ययन कराया जाना चाहिये। इन ग्रन्थों की शिक्षाओं से बच्चों को परिचित करा देना लाभदायक होता है। यदि बच्चें बचपन में इन तीन ग्रन्थों को पढ़ व समझ लेंगे तो इससे उन्हें जीवन भर अनेक प्रकार से लाभ होगा और वह अज्ञान व अन्धविश्वासों से बच सकते हैं। इस प्रकार से माता-पिता अपने बच्चों का निर्माण करें और साथ ही संस्कृत व हिन्दी के अध्ययन सहित आधुनिक विषय अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, इंजीनियरिंग, मेडीकल शिक्षा आदि का अध्ययन करें तो भी वह जीवन में सफल हो सकते हैं। हम आशा करते हैं कि आज के समय में यदि माता-पिता अपने बच्चों के निर्माण में उपुर्यक्त बातों का ध्यान रखेंगे तो उनके बच्चों को लाभ होगा। हमने कुछ प्राथमिक बातें ही लिखी हैं। इन्हें जान लेने व बड़े होने पर अच्छे आर्यसमाजों में जाने से हम समझते हैं कि बच्चे व समाज दोनों को ही लाभ होगा।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001
फोन:09412985121

(पृष्ठ 22 का शेष)

तब एक दिन एक वैद्य ने इस बच्ची को बुरी स्थिति में देखकर महेश बाबू को प्रतिदिन प्रातःकाल नीम की पत्तियों का रस पिलाने को कहा। महेश बाबू अब तक बिल्कुल निराश हो चुके थे। फिर भी ये यों ही अपनी बच्ची को नीम की पत्तियों का रस पिलाने लगे। हालांकि वह अब तक सैकड़ों जगह जा-जाकर अपनी बेटी को दिखला-दिखला कर परेशान हो गए थे। फिर भी सफलता उन्हें प्राप्त नहीं हुई थी। इसलिए उन्हें अब भी विश्वास नहीं था कि उनकी बच्ची में कोई सुधार आएगा। लेकिन आश्चर्य का ठिकाना तब न रहा जब उनकी बच्ची पूर्ण रूप से ठीक होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने लगी थी। अब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है। तब ही महेश बाबू इस नीम के महत्त्व को जान गए थे।

कल्पना के प्रदेश में खत्म हो पर्दा प्रथा

- अवधेश कुमार बच्चन

ताज्जुब की बात है कि देश की राजधानी को तीन दिशाओं से घेरे रखकर विकास की नित नई गाथा लिखने वाले हरियाणा में आज भी पर्दा प्रथा है। जिस मिट्टी में पैदा होकर कल्पना चावला, साइना नेहवाल, सुषमा स्वराज, ममता सौदा, मेघना मलिक, सुनील डबास, संतोष यादव, रानी रामपाल सरीखी बेटियां अपनी सुरभि की छटा देश-विदेश में बिखेर रही हों, वहां आज भी पर्दा प्रथा है। जहां बेटियां जीवन के हर क्षेत्र में अपने नाम का डंका बजवाने के लिए सदैव तत्पर रहती हैं, जीवनयापन के लिए अपने पसीने की नदी बहाने से गुरेज नहीं करती, खेतों में काम करने से लेकर बुग्गी तक चलाने में आगे रहती हैं, अपने माता-पिता को मुखाग्नि देने से लेकर पुरोहिती कार्य जैसे नितांत पुरुष वर्चस्व वाले क्षेत्र में कूद पड़ी हों, वहां 21वीं सदी में भी पर्दा प्रथा? और यह एक कटु सत्य है कि प्रदेश का एक भी जिला इस कुरीति से वंचित नहीं है।

पर्दा प्रथा समाज की सबसे प्रमुख बुराइयों में से एक है। राष्ट्रपिता भी इसके खिलाफ आवाज उठाते थे। वे स्त्रियों के विकास के लिए इसे बड़ा बाधक मानते थे। समाजशास्त्रियों ने तो इसे नारीत्व का ही अपमान बताया है। हकीकत है कि पर्दा प्रथा के कारण ही महिलाएं चिकित्सक तक को अपनी परेशानी बताने से गुरेज करती हैं। इसके बावजूद कुछ लोग इसे यह कहकर बढ़ावा देते हैं कि बड़े-बुजुर्गो को सम्मान देने के मकसद से पर्दा प्रथा बेहद जरूरी है। शायद यही एकमात्र कारण है कि सार्वजनिक जीवन में आ चुकी महिलाएं भी स्वयं को घूंघट से बाहर नहीं निकाल पाई है। अब इस सत्य को सभी को समझना पड़ेगा कि बड़े-बुजुर्गो का सम्मान पवित्र हृदय व शालीन व्यवहार से दिया जाता है। यदि कोई पर्दा कर ही ले परन्तु हृदय व व्यवहार में कटुता रखे, तो यह कैसा सम्मान होगा?

प्रशंसा करनी होगी जींद जिले के छाप्पर गांव की सरपंच नीलम का, जिन्होंने पिछले दिनों इस कुरीति का जड़ निर्मूल करने के उद्देश्य से कमर कस अभियान शुरु किया है। वे घर-घर जाकर नुक्कड़ सभा करके सभी महिलाओं को पर्दा प्रथा बंद करने के प्रति जागरूक कर रही हैं। इसका असर यह हुआ है कि गांव की 80 फीसदी महिलाएं उनके साथ कदमताल करने लगी है। वह मानती हैं कि पर्दा प्रथा महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकती है। सरपंच नीलम से पहले कैथल जिले के चौशाला गांव की सरपंच सीमा ने भी लगभग डेढ़ साल पहले पर्दा छोड़ो, दुनिया देखो कार्यक्रम चलाकर विकास व आत्मविश्वास की नई इबारत लिखी थी। वह वाकया भी काफी झकझोरने वाला था। रात्रि ठहराव कार्यक्रम के तहत डीसी उनके गांव आए तो उन्होंने पर्दा में रहकर ही उन्हें गुलदस्ता भेंट किया था। बाद में उन्होंने इस बुराई को समझा और प्रण कर लिया कि वे इस कुप्रथा का त्याग तो करेंगी ही, इसके उंन्मूलन के लिए हरसंभव प्रयास करेगी। सीमा का कहना था कि महिलाओं के उत्थान में सबसे बड़ी बाधा पर्दा प्रथा है।

बहरहाल, सीमा, नीलम जैसी महिला सरपंचो ने प्रगतिशील सोच के जरिये पर्दा प्रथा जैसी सामाजिक कुरीति को मिटाने के लिए जिस जज्बे के साथ अग्रदूत की भूमिका निभा रही हैं इनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। वैसे भी आसपान छूने का हौसला रखने वालों को धूप, बारिश या लू के थपेड़ो से क्या डरना? और इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारे प्रदेश की बेटियों आसमान छूने को कमर कसी हुई है।

ईर्ष्यालु

1. ईर्ष्या वह करता है जो बड़ा बनने के कार्य तो नहीं करता, पर बड़ा बनने की चाह रखता है। ईर्ष्या अपने से बराबर वाले, या अपने से छोटे, किसी से होती है-चाहे वह विद्या में छोटा हो, या धन में, या बल बुद्धि में, या खानदान में, या आयु में। जिसे बड़ा कहलाने की चाह न होगी-वह ईर्ष्या के रोग से मुक्त रहेगा।

2. ईर्ष्यालु मनुष्य का प्रेम बनावटी होगा, या स्वार्थ से होगा। सच्चा हार्दिक प्रेम नहीं हो सकता।

हम कभी माता-पिता का

हम कभी माता-पिता का ऋण चुका सकते नहीं,
इनके तो अहसान इतने की गिना सकते नहीं।।

ये कहाँ पूजा में शक्ति, ये कहाँ फल जाप का,
हो तो हो इनकी कृपा से खात्मा संताप का,
इनकी सेवा से मिले अंजाने बल, लम्बी उम्र,
इनकी तुलना में कोई वस्तु भी ला सकते नहीं,
इनके तो अहसान इतने की गिना सकते नहीं।।

देख ले हमको दु:खी तो भर ले अपने नैन ये,
एक हमारे सुख की खातिर तड़पते दिन रैन ये,
भूख लगती प्यास न और नींद भी आती नहीं,
कष्ट हो तन पे हमारे हो उठे बेचैन ये,
इनसे बढ़कर देवता भी सुख दिला सकते नहीं,
इनके तो अहसान इतने की गिना सकते नहीं।।

पढ़ लो वेद और शास्त्र का एक यही मर्म है,
योग्यतम संतान का ये सबसे उत्तम धर्म है,
जगत में जब तक जीयें सेवा करें माँ-बाप की,
इनके चरणों में ये तन, मन धन लुटाना धर्म है,
इनकी मूरत के बिना मन्दिर सजा सकते नहीं,
इनके तो अहसान इतने कि गिना सकते नहीं।।

– साभार प्रभु भक्ति गीत मञ्जरी

जहां सत्संग होता हो

जहां सत्संग होता हो वहां पर नित्य जाओ तुम
हमें फुरसत नहीं कहकर ये मौका मत गंवाओ तुम

अरे सत्संग करने की न कोई उम्र होती है
अमर ये दीप है इसकी कभी बुझती न ज्योति है
इसी ज्योति से जीवन की सदा ज्योति जलाओ तुम।।

जरा अनुभव तो करके देखों की क्या बदलाव आता है
कपट सब दूर होता है हृदय निर्मल हो जाता है
इन्हीं तत्त्वज्ञानी जनों का, सदा सान्निध्य पाओ तुम।।

करके एकाग्र मन को तुम सदा सत्संग को सुनना
होके तल्लीन भावों में, सुनहरे फूलों को चुनना
इसी सत्संग सागर में, सदा गोता लगाओ तुम।।

चढ़कर के एक बार फिर उतरे नहीं सत्संग का ये रंग
बिना प्रभु की कृपा मिलता नहीं सत्संगियों का संग
पाके प्रभु जीवन में सफल जीवन बनाओ तुम।।

– साभार वैदिक भक्ति संगीत

हंसो और हंसाओ

– रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- पति-मेरी मां के साथ ऐसे ही रहना जैसे तुम अपनी मां के साथ रहती हो।
  पत्नी-(अगले दिन सुबह)-मम्मी मेरे लिए एक कप चाय बना दो और नाश्ते में आलु के पराठे बनाना जब बन जाये तो मुझे उठा देना।
- डॉक्टर-हरियाणवी महिला से-
  आपका हीमोग्लोबिन कम है।
  आपमें आयरन की कमी है।
  आप में कैल्सियम की कमी है।
  आपमें विटामिन डी की कमी है। आपमें...
  महिला-बस डॉक्टर रहण दे। इतनी कमी तो मेरे में मेरी सासु ने भी नही काढ़ी। जितनी तू काढ़ण लाग रा सै।
- लड़की-मुझे सारे सड़े-सड़े अमरूद दे दो
  ठेलेवाला-सारे सड़े हुए?
  लड़की-हां सारे खराब अमरूद दे दो।
  ठेलेवाले ने सारे सड़े अमरूद एक थैली में भर दिए। लो मैडम आपके अमरूद
  लड़की-अब इस थैली को साइड में रख दो और साफ अमरूद में से 1 किलो दे दो।
- पत्नी को थप्पड़ मारने की सजा जज साहब ने 1000 सुनाई।
  पति ने जज से पूछा-दूसरा एक थप्पड़ मार दूं
  जज गुस्से में क्यों-क्योंकि छुट्टा नहीं है मेरे पास 2000 का नोट है।

गतांक से आगे

मृत्युभोज-एक सामाजिक कलंक

- गंगाशरण आर्य (साहित्य सुमन)

शोक का मतलब दो आँसू बहाना नहीं बल्कि शोक का मतलब अन्दर से व्यथित होना है। कहीं-कहीं पर तो इस अवसर पर कपड़ों का लेने-देन भी जमकर होता है केवल दिखाने के इस कुरीति का पालन कर बर्बादी की ओर बढ़ रहे कदमों को नहीं रोका गया तो बड़े घरों की होड़ में किसी गरीब मृतक के परिवार का शोषण होने से समाज नहीं बच सकेगा। मैं तो आप सबको लेखनी के माध्यम से कहना चाहता हूँ कि पुराने समय में ऐसा होता था कि किसी के यहाँ गमी होती थी, शोक होता था तो 10-12 दिन तक कढ़ाई नहीं चढ़ती थी ये हमारी परिपाटी होती थी। शोक की अभिव्यक्ति करो मैं पाठकगण से ये कहना चाहता हूँ अगर किसी के यहां शोक या विपत्ति की घड़ी में बैठने जाओ या मिलने जाओ तो एक नियम बना लो आज से जब मैं ऐसे व्यक्ति के घर जाऊँगा स्थानीय होने पर तो पानी के अलावा उसके घर में कुछ भी नहीं लूँगा जो कुछ भी लूँगा अपने घर में आकर लूँगा ताकि सामने वाले को कोई तकलीफ न हो। ये तो एक मानवीय सोच की बात है बाहर दूर किसी के घर जाओ तो ये नियम बना लो कि मैं केवल खिचड़ी या सादी रोटी खाऊँगा या कोई कढ़ाई की चीज नहीं खाऊँगा। ये तय कर लो तो ये समस्या, ये कुरीति अपने आप एक पल में समाप्त हो जाएगी, ऐसे समय में खिचड़ी या सादी रोटी खाकर काम चला लें। माना कि बाहर से आए हो पेट को आहार देना आवश्यक है लेकिन एक दिन क्या इतने से काम नहीं चला सकते? यदि तुम्हारा मन शोकाकुल है या शोकाकुल परिवार को सांत्वना देने के लिए गए हो तो तुम उसके सांत्वना दो उसके लिए राहत दो। मगर उसके लिए आफत मत बनो। आफत बनना ये बड़ी भारी कुरीति है, कुरीति क्या मैं तो कहता हूँ, ये अमानवीयता है। ऐसे कृत्य से स्वयं बचना चाहिए और मानव समाज को बचाना चाहिए। ये तो एक प्रकार से किसी की चिता की आँच पर रोटियाँ सेंकने जैसा हाल है। अभी आग बुझी नहीं कि खाने की आग पहले लग जाती है। इस तरह का कृत्य महा कुकृत्य है। बड़ी पीड़ा होती है जब यह देखता हूँ कि जवान मौत पर भी समाज के लोग जानवर बनकर मिठाइयाँ उड़ाने में शोकाकुल परिवार को मजबूर कर रहे हैं। पीड़ा होती है ये देखकर कि जवान माँ या बाप के मरने पर उनके बच्चे अनाथ होकर, सिर मुंडाये आस-पास घूम रहे होते हैं और समाज के प्रतिष्ठित लोग भी उस परिवार की मदद करने के स्थान पर भोज कर रहे होते हैं। जब भी हम जैसे इस अमानवीय कृत्य को बन्द करने की चर्चा समाज के लोगों से करते हैं तो समाज के ऐसे-ऐसे कुतर्क शास्त्री इसकी वकालत करने के लिए खड़े हो जाते हैं जिनकी बुद्धि के कपाट बन्द पड़े हैं इनके तर्क देखिए-ये कहते हैं कि माँ-बाप जीवन भर तुम्हारे लिए कमाकर गए हैं, तो उनके लिए तुम कुछ नहीं करोगे? कहने का मेरा मतलब है कि इमोशनल (भावनात्मक) अत्याचार शुरु कर देते हैं। जबकि वैदिक व्यवस्था में बताया गया है कि अन्त्येष्टि के बाद मृतक के लिए कुछ कर्म शेष नहीं। चाहे अपना बाप घर के कोने में भूखा पड़ा हो लेकिन यहाँ ज्ञान बांटने जरूर आ जाते हैं। हकीकत तो यह है कि आजकल अधिकांश माँ-बाप कर्ज ही छोड़कर जा रहे हैं। उनकी जीवन भर की कमाई भी तो कुरीतियाँ और दिखावे की भेंट चढ़ गई। फिर अगर कुछ पैसा उन्होंने हमारे लिए रखा भी है तो यह उनका फर्ज था। हम यही कर सकते हैं कि जीते जी उनकी सेवा कर लें। लेकिन जीते जी तो हम उनसे ठीक से बात नहीं करते। वे खाँसते रहते हैं, हम उठकर दवाई भी नहीं दे पाते हैं। अचरज होता है कि वही लोग बड़ा मृत्युभोज या दिखावा करते हैं, जिनके माँ-बाप जीवन भर तिरस्कृत रहे। खैर। चलिए, अगर माँ-बाप ने हमारे लिए कमाया है, तो उनकी याद में हम कई जनहित के कार्य कर सकते हैं जैसे कि जरूरतमन्दों की मदद कर दें, अस्पताल या गुरुकुलों में कमरे बनवा दें, पेड़ लगा दें परन्तु छिके-छिकाए लोगों को भोजन करवाने से कैसा पुण्य होगा? कुछ बुजुर्ग तो समय

से पूर्व इसी चिन्ता से मर जाते हैं कि मेरी मौत पर मेरा समाज ही मेरे बच्चों को नोंच डालेगा। मैं कहता हूँ कि कैसा फर्ज और कैसा धर्म है तुम्हारा कि मरने वाले को भी शान्ति से नहीं मरने देता।

फिर ये कहते हैं कि आए मेहमानों को भूखा ही भेज दें? पहली बात तो शोक प्रकट करने आने वाले रिश्तेदार और मित्र, मेहमान की श्रेणी में नहीं आते हैं। उनको भी सोचना चाहिए कि शोक संतृप्त परिवार को और दु:खी क्यों करें? अब तो साधन भी बहुत हैं। सुबह से शाम तक वापिस अपने घर पहुँचा जा सकता है। इस घिसे-पिटे तर्क को किनारे रख दें। मेहमानवाजी खुशी के अवसर पर की जाती है, मौत पर नहीं। और यदि मृतक के घर मेहमान बनकर आए है तो कुछ फल या मिठाई साथ लेकर क्यों नहीं आते? बेहतर यही होगा कि हम सब शोक प्रकट करने जाएँ तो खुद ही किसी भी प्रकार के भोज्य पदार्थ के लिए नकार दें। फिर ये कहते हैं कि तुमने भी तो खाया था तो खिलाना पड़ेगा? हमारे घर में आज मृत्यु हुई है क्या पता कितने वर्षों पहले इनके घर में मृत्यु हुई थी इन्होंने हमें बुलाया भी था या नहीं, लेकिन आज हम न्योता देकर बुलाएँगे तो कल इन्हें भी आग्रह करना ही पड़ेगा। इंसानियत पहले से इन कुकृत्य पर शर्मिन्दा है अब और मत करो। अरे सही ज्ञान हों जाने पर तो गलत परम्परा तोड़नी ही चाहिए उस समय ये कदापि विचार नहीं करना चाहिए कि अगर मैंने मृत्युभोज नहीं कराया तो लोग क्या कहेंगे? किसी व्यक्ति के मरने पर उसके घर जाकर भोजन करना तो पशुओं को भी मात देना है, पशु भी नहीं करते ऐसा तो...। और अब इतनी पढ़ाई-लिखाई के बाद तो यह चीज प्रत्येक समझदार व्यक्ति को मान लेनी चाहिए। गाँव और कस्बों में मृत व्यक्ति के घरों में मिठाइयों पर टूट पड़ना बिल्कुल गलत है इसलिए सबको व्यक्तिगत स्तर पर इसका संकल्प लेना चाहिए कि मैं किसी के घर जाऊँगा जरूर लेकिन पानी तक सीमित रहूँगा और दूर-दराज गया तो सामान्य भोजन करके अपना काम चलाऊँगा वह भी तब जब मेरे पास विकल्प न हो तो। यदि विकल्प है तो मैं और कहीं भी काम चला लूँगा तो ये आपका छोटा सा प्रयास समाज में एक बहुत बड़े बदलाव का आधार बनेगा। वैसे इसके पीछे वैज्ञानिक तथ्य भी है जैसे कि **महाभारत के अनुशासन पर्व में भी लिखा है कि मृत्युभोज खाने वाले की ऊर्जा नष्ट हो जाती है।** जिस प्रकार में मृत्यु जैसी विपदा आई हो उसके साथ इस संकट की घड़ी में जरूर खड़े हों और तन, मन, धन से सहयोग करें तथा बारहवीं या तेरहवीं या सत्रहवीं पर होने वाले मृतकभोज का पुरजोर बहिष्कार करें। महाभारत का युद्ध होने को था, अत: श्री कृष्ण ने दुर्योधन के घर जाकर युद्ध न करने के लिए संधि करने का आग्रह किया। दुर्योधन द्वारा आग्रह ठुकराए जाने पर श्रीकृष्ण जी को कष्ट हुआ और वह चल पड़े, तो दुर्योधन द्वारा श्रीकृष्ण से भोजन करने के आग्रह पर कृष्ण ने कहा कि **''सम्प्रीति भोज्यानि आपदा भोज्यानि वा पुनैः''** अर्थात् ''जब खिलाने वाले का मन प्रसन्न हो, खाने वाले का मन प्रसन्न हो, तभी भोजन करना चाहिए। लेकिन जब खिलाने वाले एवं खाने वालों के दिल में दर्द हो, वेदना हो, तो ऐसी स्थिति में कदापि भोजन नहीं करना चाहिए।''

हिन्दू धर्म में सोलह संस्कार बनाए गए है, जिसमें प्रथम संस्कार गर्भाधान एवं अन्तिम तथा सोलहवां संस्कार अन्त्येष्टि है। इस प्रकार जब सत्रहवां संस्कार बनाया ही नहीं गया तो सत्रहवां संस्कार, तेरहवा संस्कार कहाँ से ला टपका, पहली बात तो ये कि सत्रहवां संस्कार तो होता ही नहीं है और मरने वाले का तो अंतिम संस्कार ही किया जाता है तेरहवां संस्कार नहीं और जीवित का भी तेरहवां संस्कार तो विवाह संस्कार होता है सोलहवें संस्कार अन्त्येष्टि (अंतिम) के बाद का नहीं। लेकिन तेरहवें संस्कार का नाम लेकर तेरहवीं का भोज जाने कहाँ से आ गया? इससे साबित होता है कि तेरहवीं का भोज-कार्यक्रम समाज में वेद-विरूद्ध चलने वाले धर्म के ठेकेदार बने चालाक ब्राह्मण वेशधारी लोगों के दिमाग की उपज है। किसी भी वेदादि आर्ष ग्रन्थ में मृत्युभोज का विधान नहीं है बल्कि महाभारत के अनुशासन पर्व में लिखा है कि मृत्युभोज खाने वाले की ऊर्जा नष्ट हो जाती है। हमारे समाज का तो ईश्वर ही मालिक है।

इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि महान मनीषियों ने मृत्युभोज का जोरदार ढंग से विरोध किया है। जिस भोजन बनाने का कृत्य रो-रोकर हो रहा हो जैसे लकड़ी फाड़ी जाती तो रो-रोकर, आटा गूँथा जाता तो रो-रोकर एवं पूड़ी बनाई जाती है तो रो-रोकर यानि हर कृत्य आँसुओं से भीगा हुआ, ऐसे आँसुओं से भीगे निकृष्ट भोजन अर्थात् बारहवीं एवं तेरहवीं के भोज का पूर्ण रूपेण बहिष्कार कर हम सब को एक सही दिशा प्रदान करनी चाहिए। जानवरों से भी सीखें, जिसका साथी बिछुड़ जाने पर वह उस दिन चारा नहीं खाता है। जबकि समस्त प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ मानव, जवान आदमी की मृत्यु पर हलुवा पूड़ी पकवान खाकर शोक मनाने का नाटक रचता है। वयोवृद्ध अर्थात् अत्यंत वृद्धावस्था में किसी की मृत्यु हो जाए तो कहना ही क्या? तब न तो मृतक के परिवारजन रोते है और न ही शोक प्रकट करने आए लोग, इनके घर में तो नाच-गाना होता है देसी घी के लड्डू बनाए जाते है। पूरे के पूरे गाँव को ढोल बजा-बजाकर मुनादी कर न्योता दिया जाता है यही नहीं बाद में विवाह आदि की भाँति एक या दो-दो किलो लड्डू घरों में बाँटे भी जाते हैं।

मृत्युभोज समाज में फैली कुरीति है व समाज के लिए अभिशाप है। हिन्दू समाज में जब किसी परिवार में मौत हो जाती है, तो सभी परिजन बाहर दिन तक शोक मनाते हैं। तत्पश्चात् तेरहवीं का भोज कार्यक्रम होता है, जिसे एक जश्न का रूप दे दिया जाता है। इस दिन के कार्यक्रम के अन्तर्गत पहले कम से कम तेरह ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है जो चुपचाप खा लेते हैं जिसे जीमना भी कहते हैं। उसके बाद पण्डितों द्वारा स्वयं के लिए बताई गई वस्तुएँ मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए ब्राह्मणों को दान में दी जाती है। उसके पश्चात सभी आगन्तुक रिश्तेदारों, मित्रों एवम् मोहल्ले के सभी अड़ोसी-पड़ोसियों को मृत्युभोज के रूप में दावत दी जाती है। इस दावत में अन्य सभी दावतों के सामन पकवान एवं मिष्ठान इत्यादि पेश किया जाता है। सभी से दावत खाने के लिए आग्रह किया जाता है। जैसे कि कोई खुशी का उत्सव हो, विडम्बना यह है कि ये सभी संस्कार कार्यक्रम घर के मुखिया के लिए कराना आवश्यक होता है। वरना मृतक की आत्मा को शान्ति नहीं मिलती, चाहे परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण उसकी शान्ति कई वर्षो के लिए क्यों न भंग हो जाए (उसे कर्ज लेकर भोज-कार्यक्रम आयोजित करना पड़े)। यह सब एक परिवार को अपने से ऊपर न उठाने का ईर्ष्या भाव है जिसका प्रतिफल पूरे समाज को देखा-देखी भुगतना पड़ता है। दूसरी तरफ यदि परिवार सम्पन्न है परन्तु घर के लोग इस आडम्बर में विश्वास नहीं रखते तो उन्हें मृतक के प्रति असंवेदनशील और कंजूस जैसे शब्द कह कर अपमानित किया जाता है। क्या यह तर्क संगत है? परिवार के सदस्य की मौत का धर्म के नाम पर जश्न मनाया जाए? क्या यह उचित है? आर्थिक रूप से सक्षम न होते हुए भी अपने परिजनों का भविष्य गरीबी के भार से दबाया जाए? सभी भाई इस पर विचार करें कि क्या मृत्युभोजन करना सही है? एक परिवार के सदस्य की मृत्यु हो और हम उसकी मृत्यु पर भोज का आयोजन करें, सही नहीं लगता। इससे बढ़कर निन्दनीय कोई दूसरा कृत्य हो नहीं सकता। यदि आप इस बात से सहमत हों, तो आप आज से संकल्प लें कि आप किसी के मृत्युभोज को ग्रहण नहीं करेंगे और मृत्युभोज प्रथा को रोकने का हर संभव प्रयास करेंगे। हमारे इस प्रयास से यह कुप्रथा धीरे-धीरे एक दिन अवश्य ही पूर्णत: बंद हो जाएगी। इसमें अगर 'धर्म कारज' अर्थात् काज के नाम पर कोई अनुष्ठान करने की आवश्यकता महसूस करते हों तो गौ-शाला में दान दें, उनको चारा दें, अनाथ बच्चों की मदद कर दें, जिनको भोजन नहीं मिलता हो उनको भोजन करा दें और भी कई साधन हैं जिनको करने से हमारी आत्मा को शान्ति मिलती है, मृतक की आत्मा को नहीं क्योंकि मृतक ने तो अपने जीते जी ही अपनी आत्मा की सद्गति के लिए जो शुभ कार्य किए हैं वही उसके काम आएंगे। इसलिए आओ एक आवाज के साथ आगे आएँ और इस कुकृत्य को बन्द करने में सहयोग करें।

- ग्राम-शाहबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61,
मो. 9971644195

सच्चे मानव की तलाश

- कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

सिकन्दर जब भारत आया और एक फकीर से मिलने गया। सिकन्दर अपनी अकड़ में था। जीतता चला जा रहा था। कभी पराजित नहीं हुआ था। अब तक उसने कोई पराजय नहीं देखी और जानी थी। नैपोलियन को पराजय का मुख देखना पड़ा था। सम्भवत: संसार में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ जिसने कभी हार न देखी हो परन्तु सिकन्दर अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसने पराजय का मुँह नहीं देखा था। तभी तो उसको महान् सिकन्दर कहा जाता है परन्तु उस फकीर ने सिकन्दर को ऐसे देखा नीचे से ऊपर तक जैसे कोई पुलिस वाला किसी चोर को देखता है। सिकन्दर थोड़ा तिलमिलाया। सिकन्दर ने फकीर से कहा, ''ऐसे कैसे देखते हो? मैं हूँ महान सिकन्दर!

फकीर ने कहा, ''चुप! नासमझ। किस बात से तू महान है?'' सिकन्दर ने कहा कि किस बात से! सारी दुनियाँ पर मैंने विजय प्राप्त कर ली है। फकीर ने कहा, ''एक बात सुन। मान लिया कि तू मरूस्थल में कहीं खो जाये, रास्ता भटक जाये, प्यास तुझे लगे और अपना यह लोटा जिसमें पानी हो, तुम्हारे सामने उपस्थित हो जाऊँ और तू गिड़गिड़ाये कि मुझे पानी दे दो और मैं कहूँ कि क्या देगा पानी के बदलते में? बोलो! कितना दे सकता है कि लोटे पानी के बदले में?''

सिकन्दर ने उत्तर दिया, ''यदि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न हो जाये कि मरूस्थल में मैं बिना पानी के मर रहा हूंगा, प्यास से तड़प रहा हूंगा तो मैं उस प्यास की तीव्रता को शान्त करने के लिए आधा राज्य दे दूँगा'' फकीर ने कहा, ''यदि आधे राज्य में मैं इस पानी के लौटे को न बेचना चाहूँ तो तुम क्या करोगे?'' राजा ने झट उतर दिया कि अत्यधिक विपरीत परिस्थिति हो जाने पर मैं अपना पूर्ण राज्य भी दे दूंगा'' उस फकीर ने कहा, ''तो बस तेरी महानता का मूल्य हमें पता चल गया है। तेरे पूर्ण राज्य की कीमत मेरे एक पानी से भरे लोटे के बराबर है। एक पानी से भरे लौटे में मैं तेरे पूरे राज्य को खरीद सकता हूँ परन्तु राजन। सुनो जब मृत्यु द्वार पर दस्तक देगी तब यदि तू पूरा राज्य भी दे देगा तो भी इस पूरे राज्य के बदले एक क्षण भी नहीं पा सकेगा'' और हुआ भी यही। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सिकन्दर जब भारत से वापिस अपने नगर की ओर लौट गया था। मृत्यु ने अपने संकेत देने प्रारम्भ कर दिये। मृत्यु का समय इतना निकट आ चुका था कि वह अपने नगर तक पहुँच नहीं सकता था। मृत्यु के समय वह स्थान उसके नगर से इतनी दूर था कि कम से कम 24 घण्टे की यात्रा के पश्चात् ही पहुँच सकता था परन्तु वह अपनी माँ के साथ प्रतिज्ञा करके आया था कि चाहे कुछ भी हो जाये परन्तु वह अपनी मां के पास अवश्य आयेगा और अपनी माँ के सम्मुख संसार की जीति हुई पूर्णरूपेण सम्पत्ति उसके चरणों में रख देगा। अपने मन्त्रियों एवं वैद्यों से उसने कहा कि जो भी चाहो ले लो परन्तु किसी प्रकार मुझे 24 घण्टे के लिए जीवित रख लो ताकि मैं माँ से की हुई प्रतिज्ञा पूरी कर सकूँ।'' वैद्यों ने कहा, ''राजन्! यह असम्भव है। अब कुछ भी नहीं हो सकता। अब कोई उपाय नहीं। हमारी कोई भी औषधि आपको 24 घण्टे भी नहीं बचा सकती। सिकन्दर हंसने लगा। वैद्यों ने पूछा, ''हंसते क्यों हो?'' सिकन्दर ने कहा, ''कुछ समय पूर्व एक फकीर से मैं मिला था उसकी वह बात ''जब तेरी मृत्यु आयेगी तो यह पूर्ण राज्य के देने पर भी तुझे एक क्षण भी नहीं मिलेगा। मैंने उस फकीर की बात को अनसुना कर दिया था परन्तु आज उसकी बात सत्य सिद्ध हो रही है कि मैं अपना पूर्ण राज्य वैभव देकर भी चौबीस घण्टे के जीवन को क्रय नहीं कर सकता हूँ। यह जीवन पानी में गया। मैं तो केवल

कन्हैया लाल आर्य

पानी पर ही रेखायें खींचता रहा। आज मुझे ज्ञात हो गया है कि मृत्यु राजा और फकीर किसी में भेद नहीं करती।''

इस दृष्टान्त से यह शिक्षा मिलती है कि संसार छोड़ो या न छोड़ो अकड़ छूटनी चाहिए। कुछ लोग हैं, जो धन के कारण अकड़े हैं कि इतना हमारे पास धन है और कुछ इसलिए अकड़े हैं कि हमने इतना धन छोड़ा है परन्तु दोनों का कारण धन है। कुछ लोग धन की अकड़ में है तो कुछ लोग ज्ञान की अकड़ में है। कोई कहता है कि मुझे वेद मौखिक कण्ठस्थ है, कोई गीता और कोई बाईबिल कण्ठस्थ करने की बात पर अकड़ में है। वे तो तोते हैं केवल। तोतों से अधिक उनका कोई मूल्य नहीं। ये कण्ठस्थ करने का काम तो अब मशीनों ने कर लिया इसमें अकड़ने जैसा कुछ भी नहीं। तुम्हारा ज्ञान भी तुम्हारी मूढ़ता को भरने का कारण हो जायेगा। मानव का जन्म प्रात: काल की तरह है। कितनी शताब्दियाँ व्यतीत हो गई। कितने-कितने जन्मों के पश्चात्, कितनी योनियों में भटकने के पश्चात् कितनी यात्राओं के पश्चात यह दुर्लभ मानव चोला तुम्हें प्राप्त हुआ है उसे क्या धन और ज्ञान की अकड़ में व्यतीत कर दोगे? और तुम अब भी सोये हुए हो, कब जागोगे? मनुष्य का जन्म तो तुमने पा लिया परन्तु अभी मनन नहीं उत्पन्न हुआ इसलिए तुम नाम मात्र के मनुष्य हो। मनन तो तब होगा जब तुम मन के पार जाओगे। मन के भीतर जो छिपा है, उसकी खोज करो। मनातीत जो है, उसके अनुभव से ही तुम वस्तुत: मानवीय होते हो, नहीं तो नाम मात्र के मनुष्य हो तुम। इस सम्बन्ध में एक दृष्टान्त प्रस्तुत है:-

एक यूनानी फकीर था जिसका नाम **डायोजनीज** था। वह जीवन भर नंग-धडंग घूमता हुआ जीवन भर जलती हुई एक लालटेन लेकर घूमता रहा। जलती हुई लालटेन वह भी दिन में लोग उसे देखकर बड़े आश्चर्यचकित रहते और पूछते, ''दिन में लालटेन क्यों लिये फिरते हो'' डायोजनीज उत्तर देता, ''मैं मानव की तलाश कर रहा हूँ'' लोगों ने पूछा, ''क्या बात है तुम्हें कोई भी मानव आज तक नहीं मिला? डायोजनीज कहता ''मनुष्य का चोला पहने तो बहुत से पशु घूम रहे हैं परन्तु मुझे मानव कोई नहीं मिला। उसी की खोज में मैंने पूरा जीवन लगा दिया है।

जब डायोजनीज मृत्यु के द्वार पर पहुँच चुका था। लालटेन जलती हुई उसके बगल में राखी थी। किसी ने पूछा, ''डायोजनीज। अब तो तुम मृत्यु के द्वार तक पहुँच चुके हो, कोई मानव मिला कि नहीं?'' डायोजनीज ने उत्तर दिया, ''मानव तो नहीं मिला परन्तु परमात्मा का धन्यवाद है कि मेरी लालटेन किसी ने नहीं चुराई, यही क्या कम है? अब तो इसी धन्यवाद के साथ मृत्यु का आलिंगन कर रहा हूँ कि बहुत कृपा की उन लोगों ने इस लालटेन को नहीं चुराया।'' हम तो केवल देखने मात्र के मानव हैं। किसी व्यक्ति से पूछते हैं कि भैय्या। क्या अपना जीवन इस प्रकार व्यतीत करेंगे। परन्तु सोचो। कल कभी आता है? कल कभी आया है? सोचते रहते है-'कल करेंगे ध्यान, आज तो अवकाश नहीं है। कल-कल करते जीवन व्यतीत हो जाता है परन्तु हमारा कल नहीं आता।

मैं कई बार सोचता हूं कि 33 करोड़ देवी देवताओं को लोग मानते आये हैं अब तो इस राष्ट्र की जनसंख्या 133 करोड़ हो गई है। अब तो कोई देवता दिखाई नहीं देता। अब तो शैतान और शैतानों के शिष्य ही दृष्टिगोचर होते हैं। हमने इस धरा को नरकमय बना दिया है। लोग सत्यनारायण की कथा करवाते रहते हैं-मुझे क्षमा करेंगे आप। उसमें न तो कहीं सत्य है और न कहीं नारायण-सत्य नारायण की कथा। नाम भर सत्य नारायण की कथा है। बस लोग करवाते रहते हैं, पढ़ने वाले पढ़ते रहते हैं, सुनने वाले सुनते रहते हैं। न पढ़ने वालों के जीवन में कोई सत्य आता है और न ही सुनने वालों के जीवन में। न पढ़ने वालों का कोई अर्थ है और न ही सुनने वालों का। कैसी-कैसी झूठी बातें लोगों ने गढ़ राखी हैं-जैसे-

अंजामिल नाम का पापी मर रहा था और उसने बेटे नारायण को बुलाया। पुराने युग में सभी नाम परमात्मा के होते थे। समय ने करवट बदली

अब इस तरह के नाम रखना दकियानूसी लगता है। तो अंजामिल के बेटे का नाम नारायण था। अंजामिल था महापापी। उसने अपने बेटे को बुलाया परन्तु कथा यहां कहती है कि नारायण धोखे में आ गये। नारायण ने सोचा कि अंजामिल मेरे नाम का स्मरण कर रहा है जबकि वास्तविकता यह थी कि वह बेटे को बुला रहा था। कथानुसार अंजामिल की मृत्यु हुई, सीधे स्वर्ग पहुँचे क्योंकि मरते समय नारायण का नाम जो लिया था। जहाँ तक सम्भावना इस बात की है कि अंजामिल ने अपने बेटे को इसलिए बुलाया होगा कि वह अपने जन्मभर के लिए हुए पापों, डकैतियों, लूटों से जो धन जहाँ-जहाँ गाढ़ा हुआ था उसका पता अपने बेटे को बताये या किस प्रकर इन सभी कुकर्मो को करने की विधि बताना चाहता होगा परन्तु अपने मुख से अंजामिल ने नारायण का नाम क्या लिया कि ऊपर बैठा परमात्मा धोखे में आ गया। ये पाखण्डी लोग इन कथाओं के माध्यम से किस-किस प्रकार की कहानियाँ गढ़ लेते हैं और वे कहते हैं कि एक बार नारायण शब्द मुख से उच्चारित कर दिया तो जन्म-जन्म के पापों से मुक्ति मिल जायेगी और स्वर्ग को प्राप्ति भी हो जायेगी। समाज में इस प्रकार की कथाओं ने साधारण जनों में पाप, भ्रष्टाचार, दुराचार की भावनाओं को जन्म दिया है। वे पाखण्डी लोग इस प्रकार प्रचार करते हैं कि प्रभु पतित पावन है पतियों को क्षमा कर देगा, वह महाकरूणावान है अपने करूणा की अमृत वर्षा एक बार उसका नाम लेने से ही कर देगा। परन्तु वे इस वैदिक सिद्धान्त को भूल जाते हैं:-

'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' किये हुए कर्मो का फल अवश्य भुगतना पड़ेगा। कोई और इसके फल का भागी नहीं बन सकता। इसलिए तो डायोजनीज दिन में भी लालटेन जला कर मानव की खोज में लगा था। तभी तो वेद का ऋषि लिखता है-

''मनुर्भवः'' मनुष्य बन। **ऋषिदयानन्द जी** ने मानव उसे बताया है जो मननशील हो। प्रत्येक कर्म को विचारकर करें। पढ़े हुए और सुने हुए वैदिक सिद्धान्तों को आचरण में लाये। जिस दिन ऐसा सम्भव होगा हम सब को 'सच्चे मानव की तलाश पूर्ण हो जायेगी।

उन्नति का मूलमन्त्र

- सत्यानन्द आर्य

विश्वप्रसिद्ध अणु वैज्ञानिक आइन्स्टीन के नाम को कौन नहीं जानता। वह एक बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। एक बार वे अपनी प्रयोगशाला में किसी गम्भीर समस्या का हल तलाश करने में लगे हुए थे। समस्या हल होने का नाम ही नहीं ले रही थी। भोजन का समय हुआ। उनकी धर्मपत्नी उनके लिए खाना तथा पानी से भरा गिलास तथा जग मेज पर रख गई।

आइन्स्टीन अपने कार्य में तल्लीनता से लगे हुए थे। उनकी पत्नी ने सोचा, ''जब ये अपनी समस्या से निपट लेंगे तो मेज पर रखा हुआ भोजन स्वयं कर लेंगे।''

थोड़ी देर बाद आइन्स्टीन का कोई मित्र उनसे मिलने आया। आइन्स्टीन अपने काम में पूरी तरह व्यस्त थे। उनहें यह भी आभास नहीं हुआ कि कोई मित्र उनसे मिलने आया है। मित्र उनकी तल्लीनता देखकर अचम्भित रह गया। उसने सोचा कि चलो आज इन्हें अपना काम करने दें। फिर मुलाकात होगी। मित्र को बहुत भूख लग रही थी अतः उसने मेज पर रखा खाना खाया और चुपचाप वहाँ से चला गया। कुछ समय पश्चात् जब आइन्स्टीन की समस्या हल हो गयी तब उन्हें भोजन का ख्याल आया, उन्होंने देखा कि बर्तन खाली पड़े थे और गिलास में थोड़ा सा पानी था। उन्होंने सोचा ''देखो, मैं भी कितना मूर्ख हूँ। मैंने खाना खा लिया और मुझे याद ही नहीं है।'' उन्होंने पानी पी लिया और फिर अपने काम में लग गये। यह थी उनके काम की तल्लीनता। इसीलिए वे आज विश्व के माने हुए वैज्ञानिक कहला सके।

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लॉक सी 3 पार्क जनकपुरी	14162/-
श्री रामभज जी नेहरा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	8200/-
श्री पं. गोपीचन्द जी समसपुर, नई दिल्ली	1500/-
श्री लोकेश चन्द्र जी पांचाल सु. श्री रमेश चन्द्र पांचाल नेहरू पार्क, बहादुरगढ़	1100/-
तुसार जी गुलिया काष्ठ मण्डी रेलवे रोड़, बहादुरगढ़	1100/-
श्री मांगेराम जी आर्य सांगवान पटेल नगर, बहादुरगढ़	1000/-
श्री विराट राठी सुपुत्री श्री निखिल जी राठी सैक्टर-6,बहा.	1100/-
श्री सुरेन्द्र जी बुद्धिराजा, कीर्तिनगर, दिल्ली	1100/-
श्रीमती सुमन जी अहलावत पश्चिम विहार, दिल्ली	1100/-
श्री भीम सिंह जी डागर नीलोठी सोनीपत	1100/-
श्री महेन्द्र शर्मा जी मॉडल टाऊन, बहादुरगढ़	1100/-
श्री दरबार सिंह जी गुलिया, सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
कुमारी मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र जी पाराशर अध्यापक कॉलोनी, बहादुरगढ़	1000/-
श्री मा. प्रभुदयाल जी दुकराल मनोहर नगर, विकासपुरी,दि.	600/-
श्री भानुरूहिल सुपुत्र श्री दलवीर सिंह जी रूहिल दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री राजकुमार जी आनन्द कीर्तिनगर, दिल्ली	500/-
श्री जितेन्द्र जी खरबन्दा, कीर्तिनगर, दिल्ली	500/-
श्री रूमेल सिंह सुपुत्र श्री रणधीर सिंह जी कान्नौदा	500/-
श्री अनिल जी राणा दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	500/-
श्री राम प्रताप जी आर्य सुपुत्रश्री फूलचन्द जी आर्य नरवाना जींद हरियाणा	500/-
पूज्या माता कृष्णा चड्डा जी टैगोर गार्डन नई दिल्ली	500/-

विनोद/प्रमोद द्वारा संग्रह नजफगढ़, दिल्ली

श्री दलबीर सिंह जी, नजफगढ़	2100/-
श्री अशोक कुमार जी, नजफगढ़	2100/-
श्री हरप्रसाद जी झुल झुली,	2100/-
श्री महेश शर्मा जी, नांगलोई	2100/-
श्री महेन्द्र शर्मा जी, नजफगढ़	2100/-
श्रीमती विमला देवी, नजफगढ़	2100/-
श्री धीर सिंह यादव, टोडर मल कॉलोनी, नजफगढ़	2100/-

बहादुरगढ़ से अन्न प्राप्त

श्री सत्यवीर सिंह जी राठी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1600/- रूपये
ट्रक यूनियन परनाला रोड, बहादुरगढ़	4 क्विंटल गेहूं
श्री विश्वानाथ जी आर्य अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़	2 क्विंटल गेहूं
श्रीमती राज दहिया विवेकानन्द नगर, बहादुरगढ़	80 किलो गेहूं
श्री सत्यवीर जी एवं ऋषिपाल फलसवाल भदानी झज्जर, हरियाणा	2 क्विंटल गेहूं
सत्संग मण्डली शंकर गार्डन लाईनपार, बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
ईश्रो देवी लाईन पार बहादुरगढ़	50 किलो गेहूं
शिव ट्रबो यूनियन बादली रोड़, बहादुरगढ़	5 क्विंटल गेहूं

माजरी से अन्न प्राप्त

श्री महेन्द्र सिंह सु. श्री शीश राम जी	60 किलो
डॉ. चांदराम जी सु. श्री दिलपत सिंह	40 किलो
श्री सुभाष जी सु. श्री रणजीत सिंह जी	1700/- रूपये
श्री बरेन्द्र जी सु. श्री मांगेराम जी	1 बोरी
श्री खजान सिंह सु. श्री महा सिंह जी	1 बोरी
श्री उमेद सिंह जी आर्य	1 बोरी
श्री समेराम जी आर्य	50 किलो
श्री चांदी राम जी सुपुत्र श्री ब्रह्मा जी	50 किलो
श्री धर्मवीर जी सुपुत्र श्री छत्र सिंह	50 किलो
श्री हरि ओम जी सुपुत्र श्री जयचन्द	20 किलो
महिला सत्संग मण्डल	500/- रूपये

गौशाला हेतु दान

श्री वर्धमान स्टील बहादुरगढ़, हरियाणा	19900 तुड़ा हेतु
तुसार जी गुलिया काष्ट मण्डी बहादुरगढ़	50 किलो बाजरा
श्री भगत राम जी शर्मा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्रीमती निर्मला देवी धर्म श्री नत्थु राम जी गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़	50 किलो चुरी
श्रीमती रमन अबरोल पश्चिम विहार, दिल्ली	500/-

विविध वस्तुएं

श्री मोतीलाल शुक्ला नैनपाल की मन्दिर, टीकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसों का तेल
श्री दीपेन्द्र जी डबास शनि मन्दिर, टीकरी कलां, दिल्ली	1 टीन सरसों का तेल
श्री जे.पी. जिन्दल दयानन्द नगर, बहादुरगढ़	25 किलो चावल
स्व. महात्मा लाल दारू जी महाराज कबीर आश्रम लाईनपार, बहा.	1½ क्विंटल चावल

विशिष्ट भोजन एक समय का

श्री रामकुमार जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़

श्री संजीव जी जिन्दल अग्रवाल कॉलोनी, बहादुरगढ़

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 मई 2018 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

962
श्री अंजनि असीजा
शिवा जी नगर गुरुग्राम
हरियाणा

964
डॉ. अशोक जी नागपाल
झज्जर, हरियाणा

965
श्री दीवान सिंह जी राठी
दिल्ली रोहतक रोड, बहादुरगढ़

966
श्री सुभाष जी ठुकराल
मनोहर नगर, विकास पुरी,
दिल्ली

967
श्री हरपाल जी यादव
यादव पेट्रोल पम्प, बहादुरगढ़

968
श्री श्री ओम जी अहलावत
बालोर रोड, बहादुरगढ़

969
श्रीमती मृदुला अग्रवाल
बोस रोड, कोलकाता

970
श्री जगदीश जी शर्मा
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

971
ओजस्वी सक्सेना
सुपुत्री श्री अनुराग जी सक्सेना
महावीर पार्क, बहादुरगढ़

972
श्री दर्शन कुमार जी अग्निहोत्री
प्रीत विहार, दिल्ली

973
श्री दरबार सिंह जी गुलिया
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

974
श्री नरेन्द्र चावला जी
झज्जर, हरियाणा

975
श्री राधेश्याम जी काबरा
काबरा ब्रदार्स दिल्ली,
रोहतक रोड, बहादुरगढ़

976
श्री डॉ. नन्द किशोर जी सरदाना
झज्जर, हरियाणा

977
श्री विरेन्द्र कुमार जी नरूला
झज्जर, हरियाणा

978
मा. प्रभुदयाल जी ठुकराल
मनोहर नगर, विकास पुरी,
दिल्ली

979
डॉ. मनीष जी शर्मा
सी.एम.सी. हैल्थ केयर,
बहादुरगढ़

980
श्री राम भज सिंह जी नेहरा
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

981
श्री दमन दीवान
सैक्टर-31, गुरुग्राम
हरियाणा

982
श्री मा. द्वारका दास जी
झज्जर, हरियाणा

983
श्री ओंकारनाथ जी
झज्जर, हरियाणा

984
श्री प्रेमसिंह जी शर्मा
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

985
श्री सत्यवीर सिंह राठी
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

986
डॉ. सुभाष जी नागपाल
झज्जर, हरियाणा

आत्म - शुद्धि - पथ मासिक

मई 2018

छपी पुस्तक - पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646
पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक - आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

987
श्री सुरेन्द्र जी दून सपत्नीक
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

988
श्री राजवीर जी आर्य
धर्म विहार, बहादुरगढ़

989
श्री पं. जयभगवान जी आर्य
झज्जर, हरियाणा

990
श्री मा. ब्रह्मजीत जी आर्य
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

991
रियांस दलाल
सुपौत्र श्री महावीर सिंह दलाल
आत्मशुद्धि इन्क्लेव, बहादुरगढ़

992
श्री सुधीर नागपाल
एच-37, रैजीडेन्सी ग्रीन,
46 सैक्टर, गुरुग्राम

993
आर्य समाज मन्दिर
सी-ब्लॉक, पंखा रोड
जनकपुरी, नई दिल्ली

994
श्री प्रेम सिंह जी छिकारा
प्रेमनगर, सैक्टर-6, बहादुरगढ़

995
श्री सुनील कुमार जी
सुपुत्र श्री राजकर्ण जी आर्य
बादली झज्जर, हरियाणा

996
श्री संजय जी भारत मोटर
वर्कशॉप बहादुरगढ़

997
श्री रविन्द्र जी शर्मा
सुपुत्र श्री रामधन जी शर्मा
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

998
चौधरी दीनबन्धु सर
छोटूराम धर्मशाला
बहादुरगढ़

999
श्री राम प्रकाशार्य जी
असालतपुर, जनकपुरी
दिल्ली

फर्रूखनगर आश्रम मासिक सत्संग में मुख्य यजमान श्री सुकर्मपाल जी आर्य एवम् श्रीमती रूक्मेश आर्या बनें

(विवरण पृष्ठ 4 पर)